Sri Gaura Radha Govinda
Harinam Trust

Name: **Poobalan Naidoo**

~~~~~~

Radha Govinda International
Govardhan Parikrama road
Opposite SBI ATM
Radhakund 281504

~~~~~~

Hare Krishna Hare Krishna Krishna Krishna Hare Hare
Hare Rama Hare Rama Rama Rama Hare Hare

नाम : Poobalan Naidoo [पुरुष]

सप्ताह के दिन में। : रविवार

क्योंकि आपने रविवार में जन्म लिया है, आपको जीवन में मुसीबतों का सामना करने की शक्ति होगा । लोग आपके ईमानदारी और बुद्वि वैभव पर प्रशांसा करेगें । आप यात्रा करना पसंद करते है ।

जन्म नक्षत्र : हस्त

जन्म नक्षत्र हस्त है। आप उत्साही, मेधावी, शूरवीर, निडर, मनस्वी, यशस्वी, परदेश में रहनेवाले और दूसरों के काम आनेवाले व्यक्ति हैं। गुरुजनों, विद्वानों और धर्माचार्यों को सम्मान देंगे। सब तरह की संपत्ति प्राप्त होगा, चाहे न्यून मात्रा में ही। शास्त्र के इन वचनों की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा - 'असत्य भाषणों धूर्तः सुरापो बन्धुवर्जितः। हस्ते जातो नरचैव जायते परदारिकः।।' अर्थात् हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति असत्य भाषी, धूर्त, मधपी, बन्धुहीन या बन्धुओं से मिलजुल कर न रहनेवाला और परदारगामी होता है।

तिथि : व्दादशी

आपका जन्म द्वादशी तिथि में हुआ है। प्रभु कृपा से आप अनेक गुणों से संपन्न हैं। जो लोग आप को पहचानते हैं वे आप को आत्मार्थता से प्यार करेंगे; आपके धन के लिए नहीं। आपकी कमाई बड़े पैमाने में ज्ञान और मानवता के प्यार के उपयोग में आयेगी। व्यवहार कुशलता, अन्नदाता, जल प्रियता और राजकृपा प्राप्त करना आपके अन्य गुण होंगे।

करण : सुवर

कौलवा करना में जन्म लेने से यह सूचित करता है कि आपको जीवन में थातना और खुशियों से गुज़रना पडेगा । जानवरों के प्रति आपके मन में दया औप स्नेह का भाव होगा । आप पशु पालन सफलता पूर्वक आपना सकते है ।

नित्ययोग : आयुषमत

आयुष्मान नित्ययोग में आपका जन्म हुआ है। कर्मशीलता होने के साथ परिवार में या समाज में नेतृत्व प्राप्त करने की स्वाभाविक क्षमता आपको प्राप्त है। लोग आपके निर्णय और बिना अनुसंधान का विरोध स्वीकार करते हैं। ये सब आप के जीवन को धन्य बनाते हैं। आपकी आयु औसत आयु से अधिक है। संतुष्ट जीवन जीने के लिए जो गुण चाहिए उससे आप अनुग्रहीत हैं। धन उपार्जन में आप प्रवीण हैं। बाग-बगीचों में घूमने के शौकीन हैं।

नाम	: Poobalan Naidoo
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 21 नवेम्बर, 1954 रविवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 04:16:41 PM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 02:00 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Tongaat
रेखांश & अक्षांश (Deg.Mins)	: 31.8 पूरब , 29.59 दक्षिण
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 13 मिनिट. 53 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **हस्त** - 4
जन्म राशी - राशी का देव	: **कन्या** - बुध
लग्न - लग्न का देव	: मेष - मंगल
तिथि	: व्दादशी, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 04:49 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:33 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 13.44
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 34.20
प्रादेशिक समय	: Standard Time + 5 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: रविवार
कलिदिना	: 1846602
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: चन्द्र
गणम्, योनी, जानवर	: देव, स्त्री, भैंस
पक्षी, पेड	: कौआ, आंवडे का पेड़
चन्द्र अवस्था	: 12 / 12
चन्द्र वेला	: 35 / 36
चन्द्र क्रिया	: 59 / 60
ठगड़ा राशी	: तुला,मकर
करण	: सुवर
नित्ययोग	: आयुषमत
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: वृशचिक - अनुराधा
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Scorpio
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 121:45:32 - मघा
योगी गृह	: केतु
द्वगुणति योगी	: रवि
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: स्वाति - राहु
आत्म करक - करकांसा	: मंगल - कन्या
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शुक्र
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: तुला
धन अरुढ़ा	: मीन

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - वृश्चिक

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	30:36:44	गुरु	119:54:34 रितु
चन्द्र	196:9:0	शनि	224:3:26
रवि	238:44:18	युरेनस	117:33:34 रितु
बुध	221:0:19	नेप्टयून	206:58:41
शुक्र	228:44:12 रितु	प्लूटो	146:47:14
मंगल	321:1:25	नोड	277:33:48

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 23डिग्रि.13 मिनिट.53 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	7:22:51	मेष	7:22:51	अशविनि	3
चन्द्र	172:55:7	कन्या	22:55:7	हस्त	4
रवि	215:30:25	वृशचिक	5:30:25	अनुराधा	1
बुध	197:46:26	तुला	17:46:26	स्वाति	4
शुक्र	205:30:19	तुला	25:30:19रितु	विशखा	2
मंगल	297:47:32	मकर	27:47:32	धनिष्ठ	2
गुरु	96:40:41	कर्क	6:40:41रितु	पुष्य	2
शनि	200:49:33	तुला	20:49:33	विशखा	1
राहु	254:19:55	धनु	14:19:55	पूर्वषाढा	1
केतु	74:19:55	मिथुन	14:19:55	आर्द्र	3
गुलिक	13:2:56	मेष	13:2:56	अशविनि	4

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	अशविनि	केतु	राहु	चन्द्र
चन्द्र	हस्त	चन्द्र	रवि	गुरु
रवि	अनुराधा	शनि	बुध	बुध
बुध	स्वाति	राहु	रवि	शनि
शुक्र	विशखा	गुरु	बुध	शनि
मंगल	धनिष्ठ	मंगल	गुरु	राहु
गुरु	पुष्य	शनि	बुध	राहु
शनि	विशखा	गुरु	गुरु	केतु
राहु	पूर्वषाढा	शुक्र	शुक्र	राहु
केतु	आर्द्र	राहु	बुध	शनि
गुलिक	अशविनि	केतु	बुध	शनि

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	मेष	7:22:51	अशविनि / 3	गुरु	कर्क	6:40:41R	पुष्य / 2
चन्द्र	कन्या	22:55:7	हस्त / 4	शनि	तुला	20:49:33	विशखा / 1
रवि	वृशचिक	5:30:25	अनुराधा / 1	राहु	धनु	14:19:55	पूर्वषाढा / 1
बुध	तुला	17:46:26	स्वाति / 4	केतु	मिथुन	14:19:55	आर्द्र / 3
शुक्र	तुला	25:30:19R	विशखा / 2	गुलिक	मेष	13:2:56	अशविनि / 4
मंगल	मकर	27:47:32	धनिष्ठ / 2				

राशी

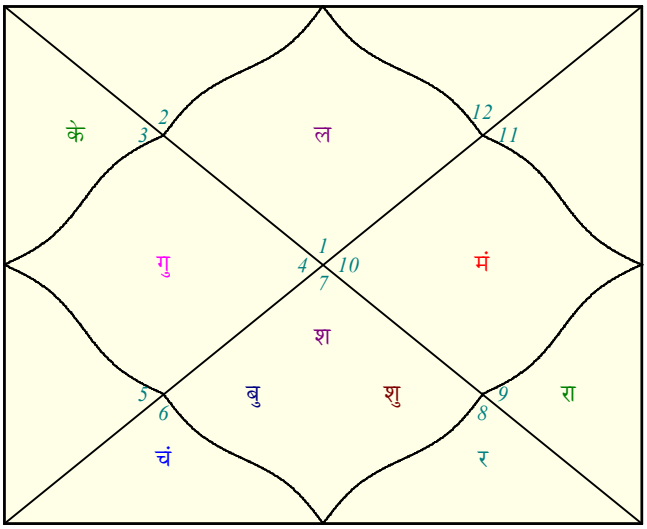

नवांश

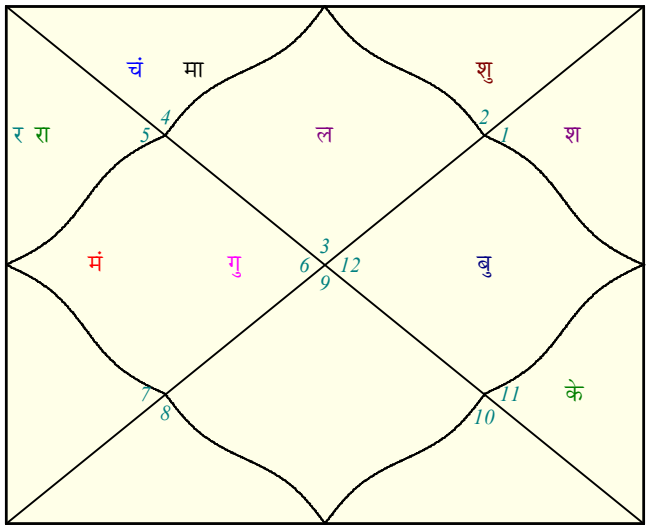

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 0 साल, 3 महीने, 22 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

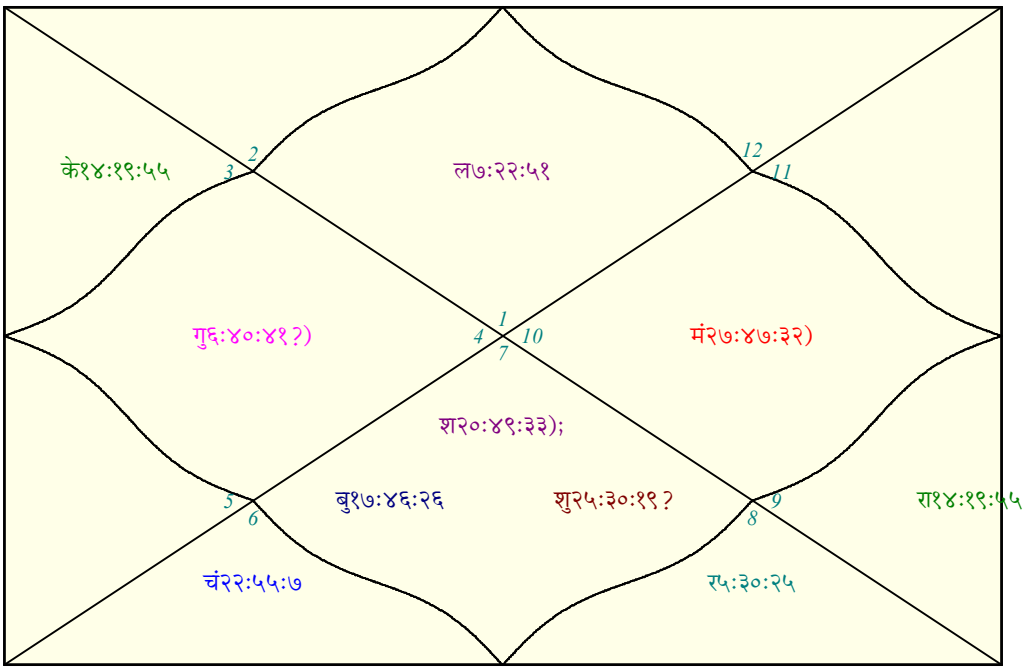

? विपरीत परिस्थिती) श्रेष्ट समय (क्षीण परिस्थिती ; सयहोग

नवांश: चं::कर्क र::सिंह बु::मीन शु::वृषभ मं::कन्या
गु::कन्या श::मेष रा::सिंह के::कुंम्भ ल::मिथुन मा::कर्क

भाव कुंडली

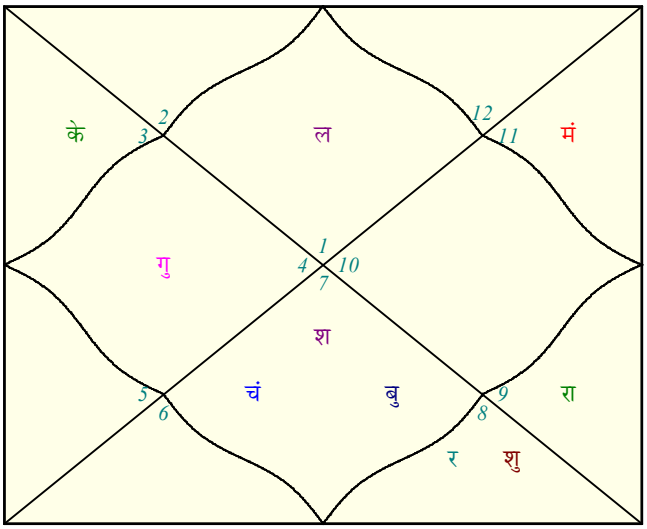

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	352:47:15	7:22:51	22:47:15	मा
2	22:47:15	38:11:39	53:36:3	
3	53:36:3	69:0:27	84:24:52	के
4	84:24:52	99:49:16	114:24:52	गु
5	114:24:52	129:0:27	143:36:3	
6	143:36:3	158:11:39	172:47:15	
7	172:47:15	187:22:51	202:47:15	चं,बु,श
8	202:47:15	218:11:39	233:36:3	र,शु
9	233:36:3	249:0:27	264:24:52	रा
10	264:24:52	279:49:16	294:24:52	
11	294:24:52	309:0:27	323:36:3	मं
12	323:36:3	338:11:39	352:47:15	

सुदर्शन चक्र

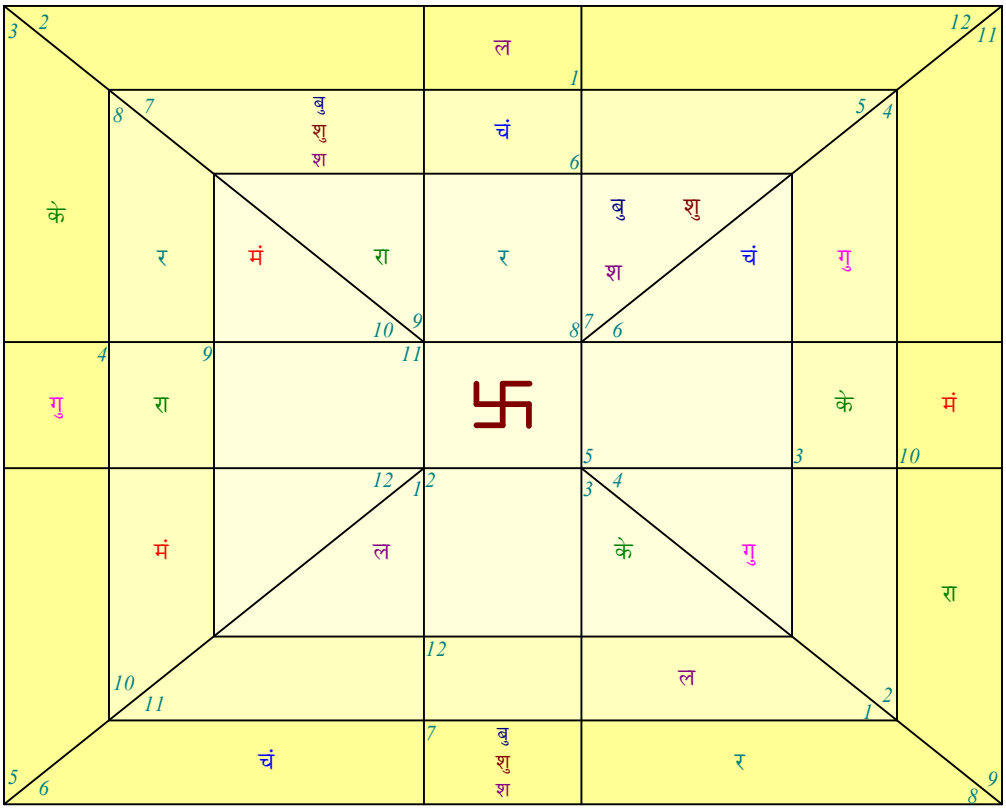

चं	=	चन्द्र	र	=	रवि	बु	=	बुध
शु	=	शुक्र	मं	=	मंगल	गु	=	गुरु
श	=	शनि	रा	=	राहु	के	=	केतु

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	4:49:3	6:32:3
बुध	अर्धप्रहर	9:58:3	11:41:3
मंगल	मृत्यु	8:15:3	9:58:3
गुरु	यमकंठक	11:41:3	13:24:3
शनि	गुलिक	15:7:3	16:50:3

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	213:49:20	वृशचिक	3:49:20	अनुराधा	1
अर्धप्रहर	285:36:32	मकर	15:36:32	श्रावण	2
मृत्यु	263:41:37	धनु	23:41:37	पूर्वषाढा	4
यमकंठक	307:31:44	कुंम्भ	7:31:44	शताभिषा	1
गुलिक	352:20:21	मीन	22:20:21	रेवत्ति	2
परिवेष	191:9:34	तुला	11:9:34	स्वाति	2
इंद्रचाप	168:50:25	कन्या	18:50:25	हस्त	3
व्यथिपात	11:9:34	मेष	11:9:34	अशविनि	4
उपकेतु	185:30:25	तुला	5:30:25	चित्रा	4
धूम	348:50:25	मीन	18:50:25	रेवत्ति	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	अनुराधा	शनि	शनि	बुध
अर्धप्रहर	श्रावण	चन्द्र	गुरु	राहु
मृत्यु	पूर्वषाढा	शुक्र	शनि	राहु
यमकंठक	शताभिषा	राहु	राहु	शनि
गुलिक	रेवत्ति	बुध	चन्द्र	मंगल
परिवेष	स्वाति	राहु	शनि	केतु
इंद्रचाप	हस्त	चन्द्र	बुध	राहु
व्यथिपात	अशविनि	केतु	शनि	राहु
उपकेतु	चित्रा	मंगल	रवि	शुक्र
धूम	रेवत्ति	बुध	केतु	मंगल

उपग्रह राशी

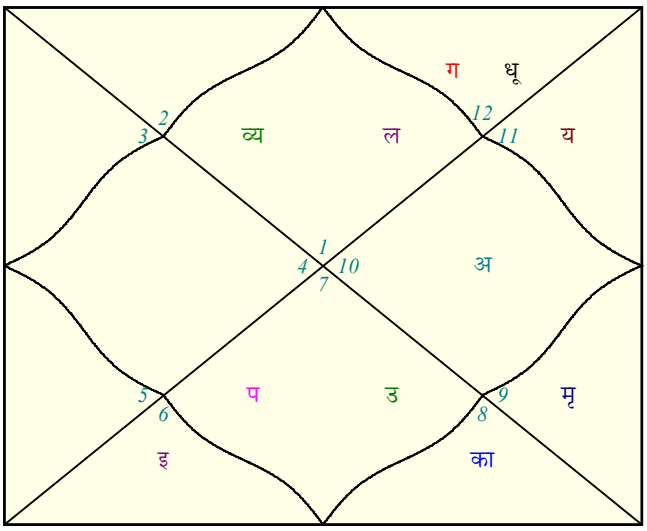

का	=	काल	अ	=	अर्धप्रहर
मृ	=	मृत्यु	य	=	यमकंठक
ग	=	गुलिक	प	=	परिवेष
इ	=	इंद्रचाप	व्य	=	व्यथिपात
उ	=	उपकेतु	धू	=	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

	कारक	गृह	
१	आत्म करक	मंगल	करकांसाः कन्या
२	अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	शुक्र	
३	भ्रात्रि (बाई / बहन)	चन्द्र	
४	मात्रि (माता)	शनि	
५	पुत्र (बच्चे)	बुध	
६	ज्ञाति (रिशतेदार)	गुरु	
७	दारा (पति या पत्नी)	रवि	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	तुला
P 2	धन अरुढ़ा	मीन
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	कुंम्भ
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	वृशचिक
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	कुंम्भ
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	वृशचिक
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	तुला
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	मीन
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	कुंम्भ
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	कर्क
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	मिथुन
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	वृशचिक

अरुढ़ चक्र

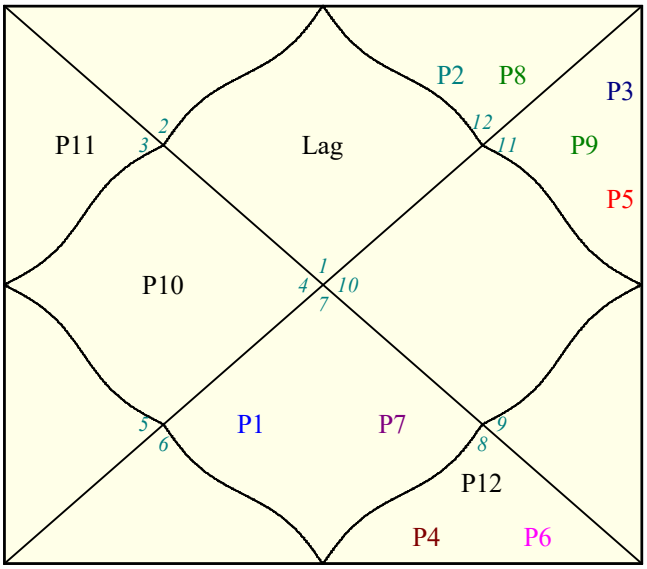

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	1	6:	8:	7	7	10:	4:	7	9	3	1
औरा	5	5	4:	4:	4:	5	4:	4:	5	5	5
द्रिख्खन	1	2:	8:	11	3	6:	4:	3	1	7	5
चतूथांश	1	3	8:	1	4:	7	4:	1	12:	6:	4:
सप्तांश	2:	5	3	11	12:	10:	11	11	12:	6:	4:
नवांश	3	4:	5	12:	2:	6:	6:	1	5	11	4:
दशांश	3	9	5	12:	3	3	2:	1	1	7	5
व्दादशांश	3	3	10:	2:	5	9	6:	3	2:	8:	6:
सोडांश	4:	9	7	10:	2:	3	4:	12:	4:	4:	7
विंशाम्स	5	8:	12:	12:	6:	7	5	2:	2:	2:	9
चतुर्विंशाम्स	10:	10:	8:	7	1	2:	9	9	4:	4:	3
भम्श	7	12:	2:	10:	5	5	4:	1	1	7	12:
त्रिंमशांश	11	10:	6:	9	7	8:	6:	3	9	9	9
खवेदांश	10:	1	2:	12:	11	8:	3	4:	8:	8:	6:
	12:	7	1	3	3	6:	11	8:	6:	6:	8:
शष्टियांश	3	3	7	6:	10:	5	5	12:	1	7	3
ओजराशी गणन	11	9	6	7	9	8	6	10	8	8	9

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	मं	+बु	+मं	+शु	^शु	=श	+चं	+शु	~गु	~बु	मं
औरा	र	+र	+चं	~चं	~चं	+र	+चं	~चं	~र	+र	र
द्रिख्खन	मं	=शु	+मं	=श	+बु	~बु	+चं	+बु	=मं	=शु	र
चतूथांश	मं	+बु	+मं	=मं	~चं	=शु	+चं	~मं	~गु	~बु	चं
सप्तांश	शु	+र	=बु	=श	=गु	=श	=श	^श	~गु	~बु	चं
नवांश	बु	^चं	^र	=गु	^शु	~बु	~बु	~मं	~र	~श	चं
दशांश	बु	=गु	^र	=गु	+बु	~बु	~शु	~मं	=मं	=शु	र
व्दादशांश	बु	+बु	~श	+शु	~र	+गु	~बु	+बु	+शु	+मं	बु
सोडांश	चं	=गु	~शु	=श	^शु	~बु	+चं	=गु	=चं	=चं	शु
विंशाम्स	र	=मं	+गु	=गु	+बु	=शु	+र	+शु	+शु	=शु	गु
चतुर्विंशाम्स	श	=श	+मं	+शु	=मं	=शु	^गु	=गु	=चं	=चं	बु
भम्श	शु	=गु	~शु	=श	~र	+र	+चं	~मं	=मं	=शु	गु
त्रिंमशांश	श	=श	=बु	=गु	^शु	^मं	~बु	+बु	~गु	+गु	गु
खवेदांश	श	=मं	~शु	=गु	+श	^मं	~बु	~चं	=मं	+मं	बु
	गु	=शु	+मं	^बु	+बु	~बु	=श	~मं	+बु	~बु	मं
शष्टियांश	बु	+बु	~शु	^बु	+श	+र	+र	=गु	=मं	=शु	बु

^ अपना वर्ग   + क़्द्धत्ड्डदड्डथ्र   = निश्पक्षीय   ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट् दिया जाता है ।

गृहों	षढ्वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	2-किम्सुकम्स	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	2-बीढ़काम्स
रवि	1-...	1-...	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स
बुध	0-	0-	1-...	2-बीढ़काम्स
शुक्र	3-व्यजनांमस	4-चामरांस	5-सिंहासनाम्स	5-कणठुकाम्स
मंगल	2-किम्सुकम्स	3-व्यजनांमस	3-उत्तमामस	4-नागपुष्पाम्स
गुरु	3-व्यजनांमस	3-व्यजनांमस	4-गेपुराम्स	7-कल्पकवृक्षकाम्स
शनि	1-...	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	2-बीढ़काम्स

षोढ़सवर्ग चार्ट

राशी[D1]

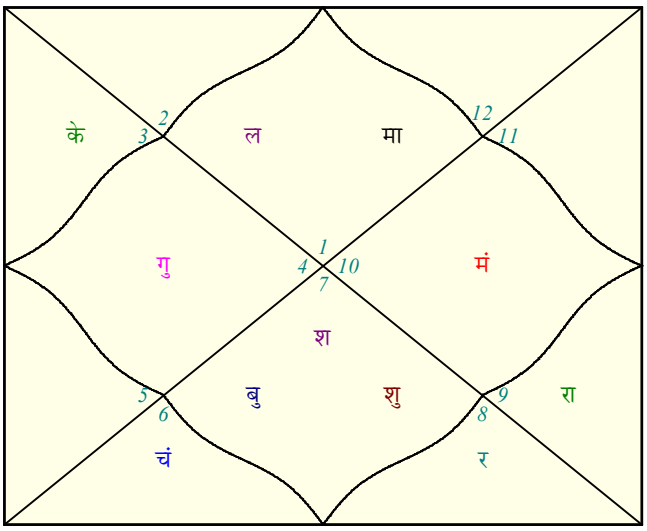

औरा[D2]

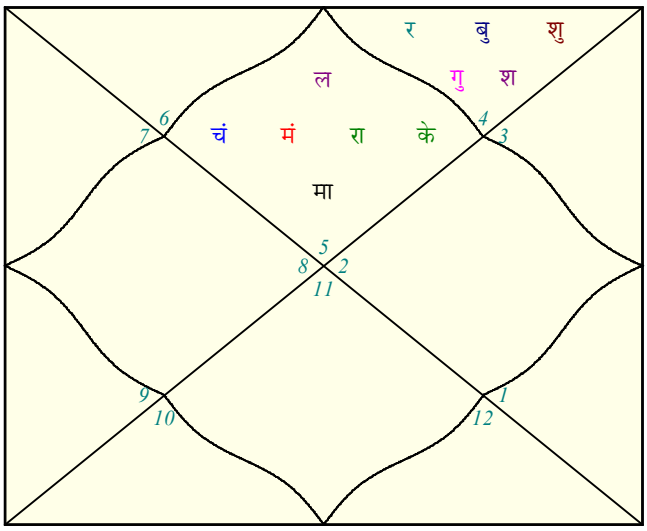

द्रिख्खन[D3]

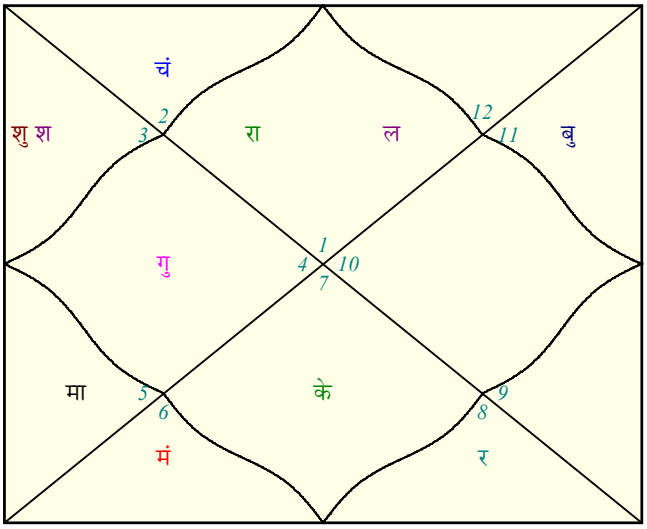

चतूथांश[D4]

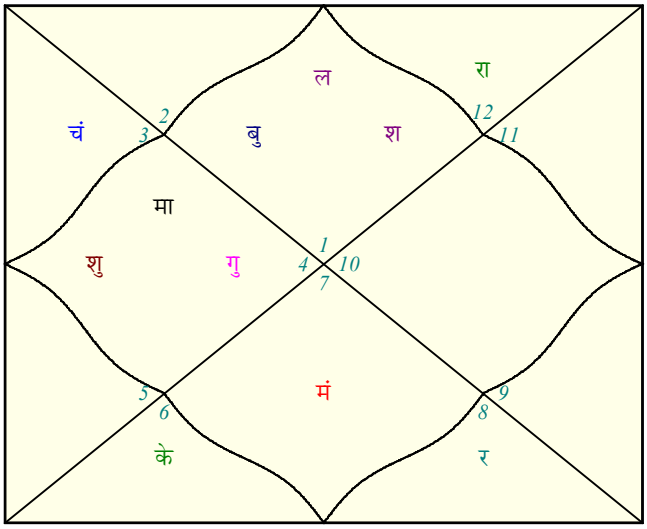

सप्तांश[D7]

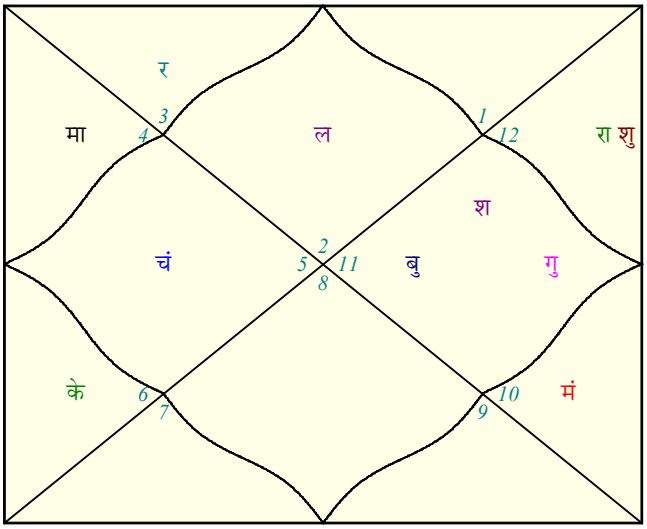

नवांश[D9]

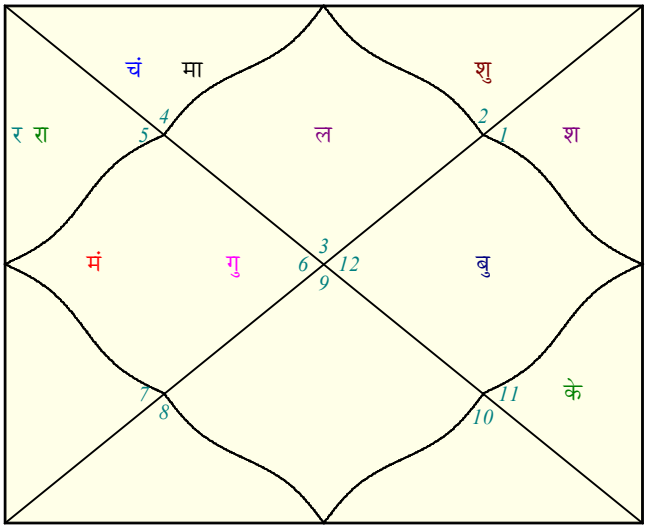

दशांश[D10]

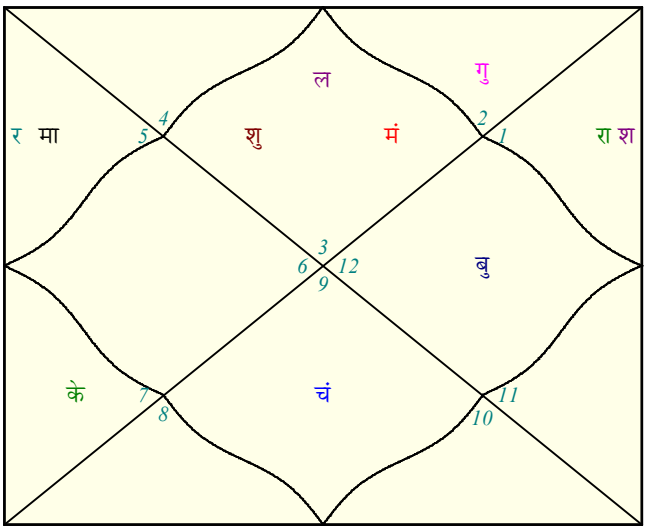

व्दादशांश[D12]

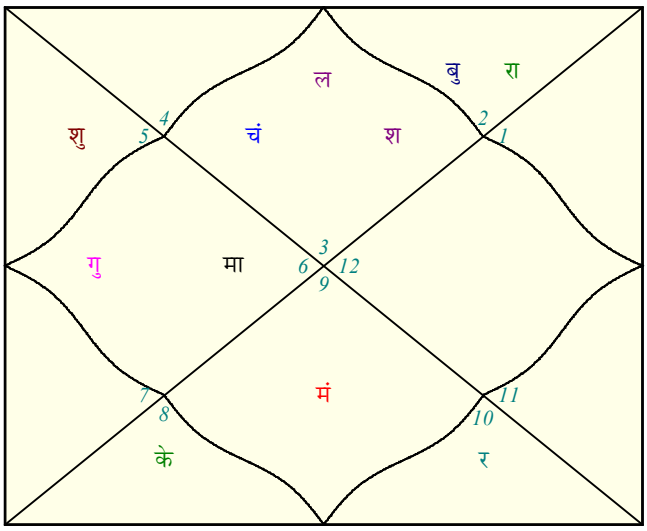

सोडांश[D16]

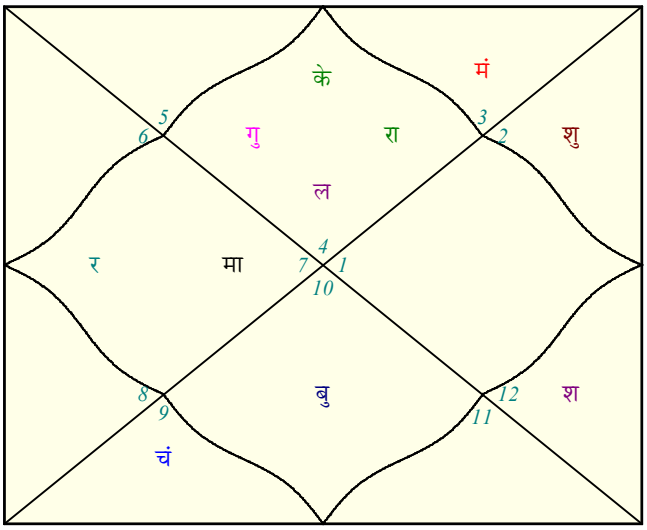

विंशाम्स[D20]

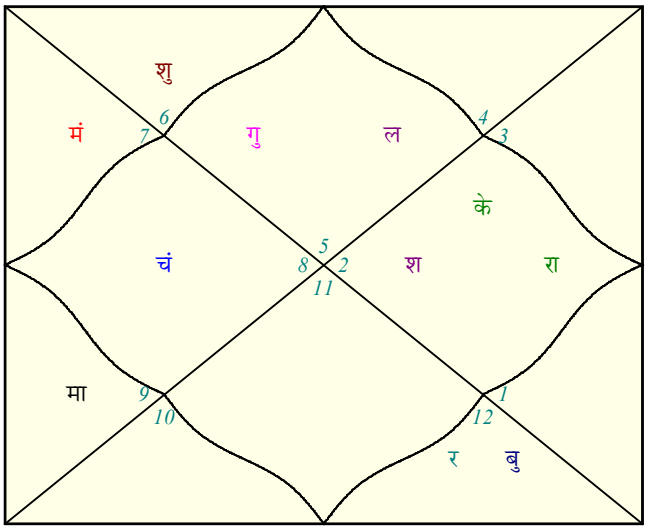

चतुर्विंशाम्स[D24]

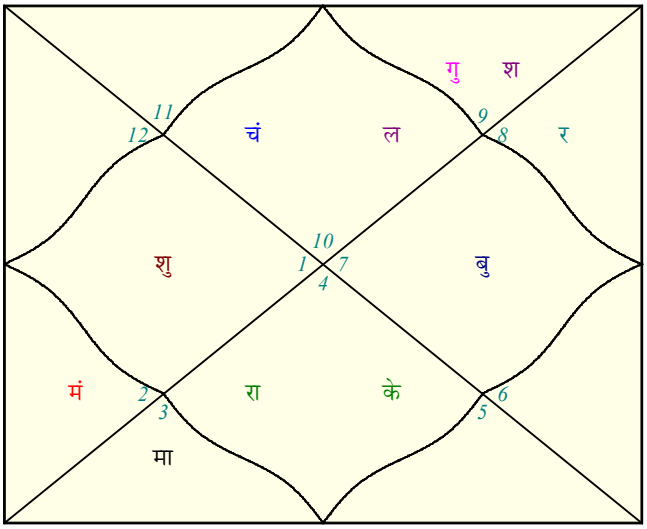

भम्श[D27]

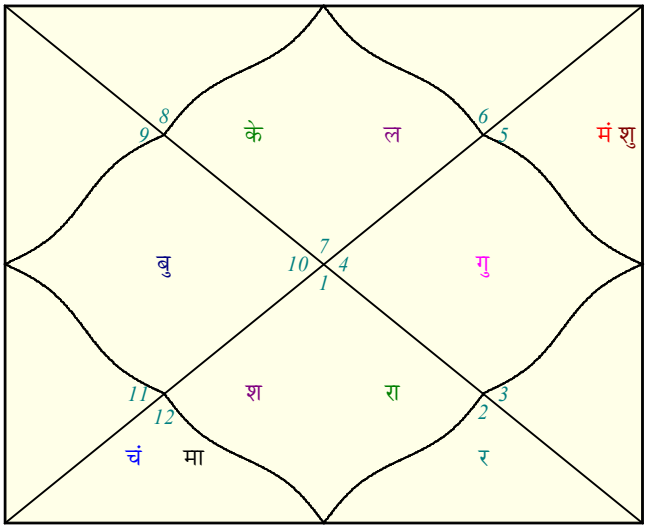

त्रिंमशांश[D30]

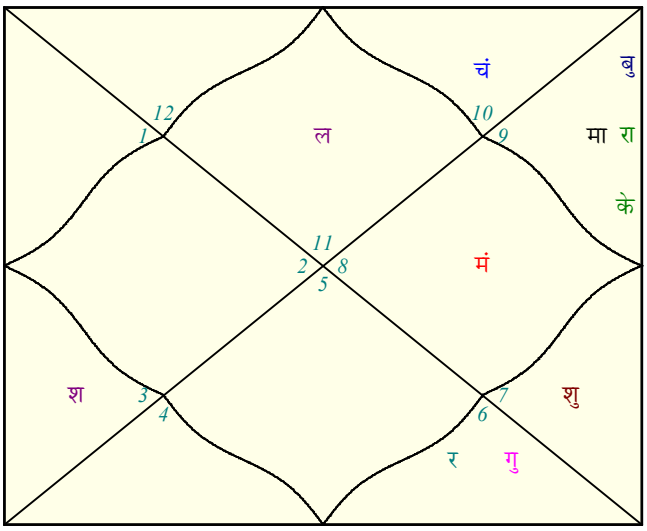

खवेदांश[D40]

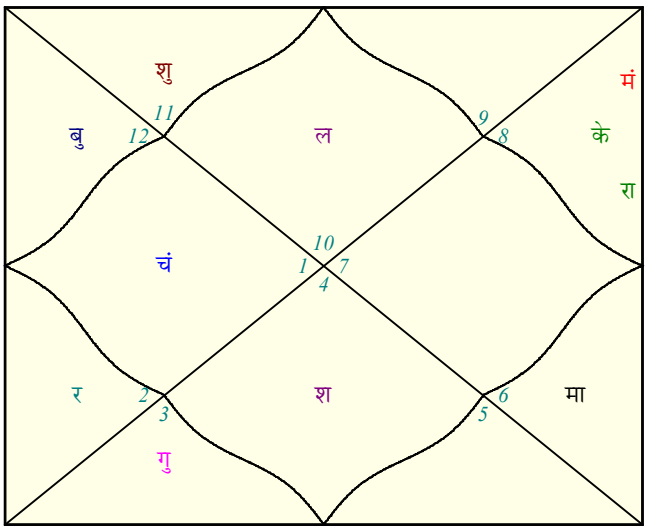

[D45]

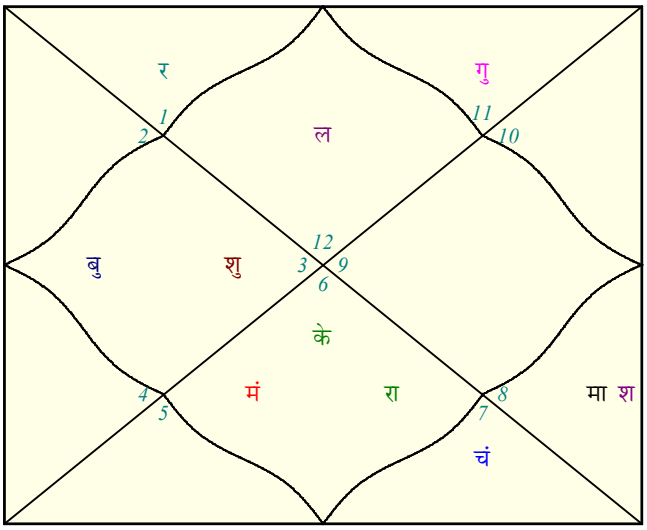

शष्टियांश[D60]

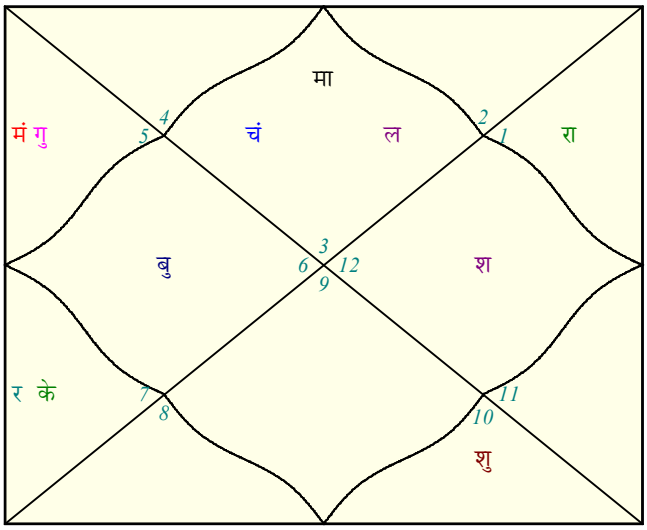

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1	1	1		1			4
वृषभ		1	1		1	1			4
मिथुन	1	1		1	1	1		1	6
कर्क	1		1	1		1			4
सिंह		1	1	1			1		4
कन्या	1	1			1			1	4
तुला			1		1	1			3
वृशचिक	1				1				2
धनु			1	1			1		3
मकर		1	1	1		1		1	5
कुंम्भ	1		1	1	1	1	1	1	7
मीन	1				1		1		3
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1	1		1		3
वृषभ		1				1	1		3
मिथुन	1	1	1				1	1	5
कर्क	1	1	1		1		1	1	6
सिंह		1	1		1		1		4
कन्या		1	1	1	1			1	5
तुला					1		1		2
वृशचिक	1	1			1	1	1		5
धनु		1	1			1			3
मकर					1		1	1	3
कुंम्भ	1	1	1		1			1	5
मीन			1	1		1		1	4
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1			1		1	1	5
वृषभ				1		1	1	1	4
मिथुन	1		1	1		1	1		5
कर्क	1	1	1		1		1	1	6
सिंह			1	1	1		1		4
कन्या		1	1		1			1	4
तुला	1	1	1	1	1		1		6
वृशचिक				1	1		1	1	4
धनु	1		1	1		1			4
मकर				1	1		1	1	4
कुंम्भ	1		1	1	1	1		1	6
मीन		1	1						2
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1					1		1	3
वृषभ	1			1	1	1	1	1	6
मिथुन		1	1	1	1		1	1	6
कर्क	1			1			1	1	4
सिंह	1		1	1			1	1	5
कन्या	1	1			1				3
तुला	1	1		1					3
वृशचिक	1			1	1	1		1	5
धनु	1		1	1	1		1	1	6
मकर	1			1			1		3
कुंम्भ			1	1		1	1	1	5
मीन			1		1	1			3
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1			1	1	1	1	5
वृषभ				1		1	1		3
मिथुन						1	1	1	3
कर्क	1				1		1		3
सिंह		1	1	1	1		1		5
कन्या		1		1				1	3
तुला					1		1		2
वृशचिक	1				1				2
धनु			1			1			2
मकर		1			1		1	1	4
कुंम्भ	1		1		1			1	4
मीन		1	1	1					3
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष					1	1		1	3
वृषभ	1	1				1		1	4
मिथुन		1	1	1					3
कर्क	1	1	1	1	1	1		1	7
सिंह		1	1	1	1	1		1	6
कन्या		1				1	1	1	4
तुला	1		1		1	1		1	5
वृशचिक		1	1	1	1				4
धनु		1					1	1	3
मकर	1	1	1		1	1		1	6
कुंम्भ		1	1	1	1	1	1	1	7
मीन	1		1	1			1		4
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष								1	1
वृषभ		1	1		1	1			4
मिथुन		1	1		1	1		1	5
कर्क	1		1					1	3
सिंह		1	1	1			1		4
कन्या		1	1	1				1	4
तुला					1				1
वृशचिक	1	1			1	1			4
धनु		1			1	1	1		4
मकर								1	1
कुंम्भ	1	1					1	1	4
मीन			1	1	1		1		4
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	3	5	3	5	3	1	24
वृषभ	4	3	4	6	3	4	4	28
मिथुन	6	5	5	6	3	3	5	33
कर्क	4	6	6	4	3	7	3	33
सिंह	4	4	4	5	5	6	4	32
कन्या	4	5	4	3	3	4	4	27
तुला	3	2	6	3	2	5	1	22
वृशचिक	2	5	4	5	2	4	4	26
धनु	3	3	4	6	2	3	4	25
मकर	5	3	4	3	4	6	1	26
कुंम्भ	7	5	6	5	4	7	4	38
मीन	3	4	2	3	3	4	4	23
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

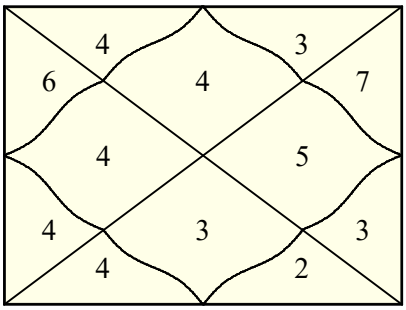

रवि अष्टकवर्ग 48

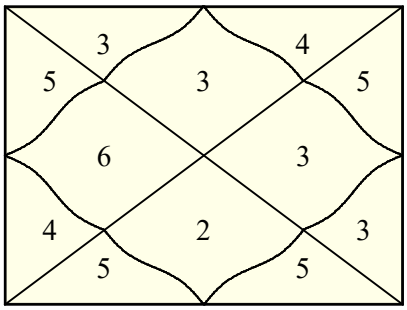

बुध अष्टकवर्ग 54

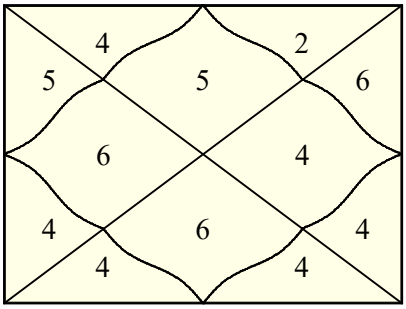

शुक्र अष्टकवर्ग 52

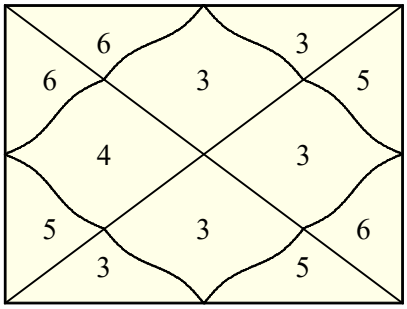

मंगल अष्टकवर्ग 39

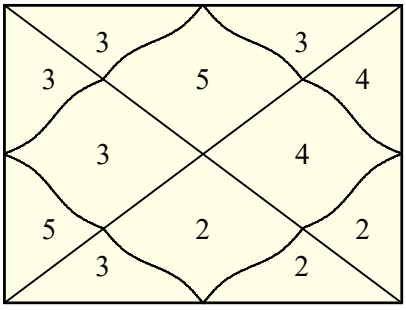

गुरु अष्टकवर्ग 56

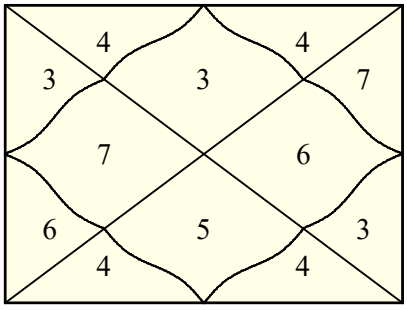

शनि अष्टकवर्ग 39

सर्व अष्टकवर्ग 337

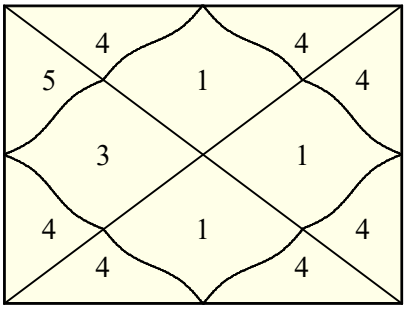

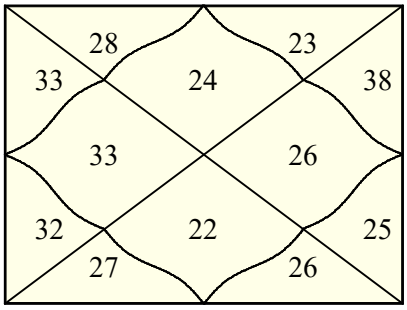

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

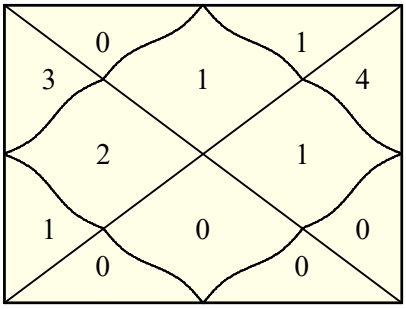

रवि अष्टकवर्ग 12

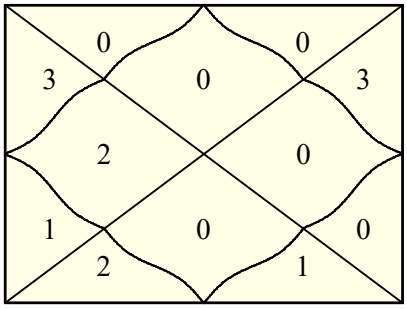

बुध अष्टकवर्ग 9

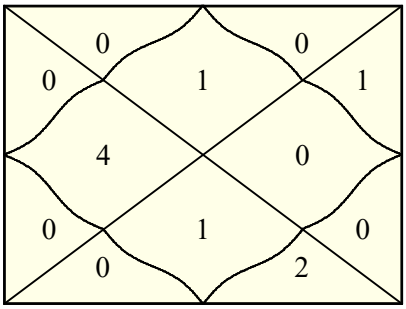

शुक्र अष्टकवर्ग 16

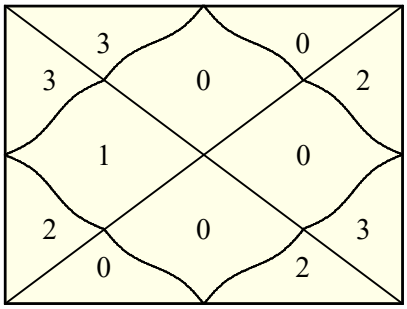

मंगल अष्टकवर्ग 12

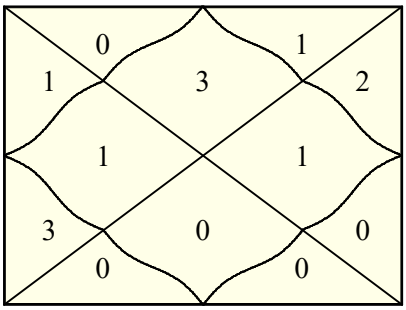

गुरु अष्टकवर्ग 14

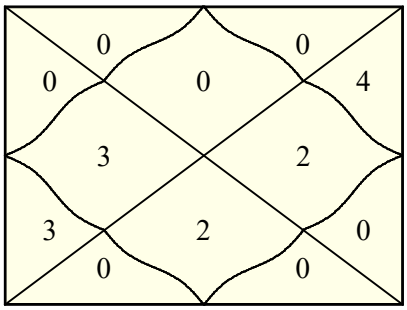

शनि अष्टकवर्ग 21

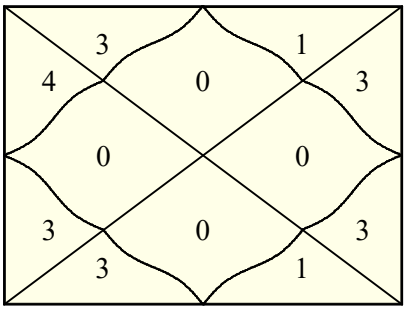

सर्व अष्टकवर्ग 97

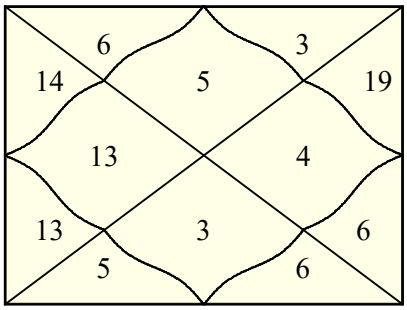

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 10

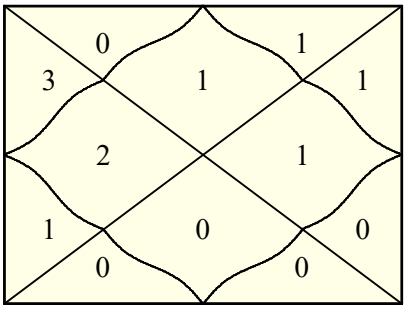

रवि अष्टकवर्ग 12

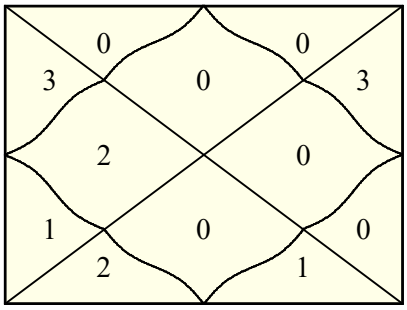

बुध अष्टकवर्ग 8

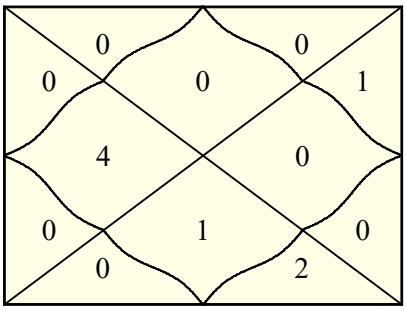

शुक्र अष्टकवर्ग 16

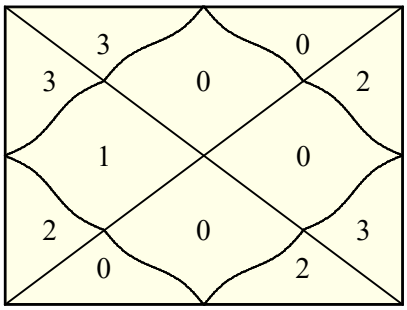

मंगल अष्टकवर्ग 11

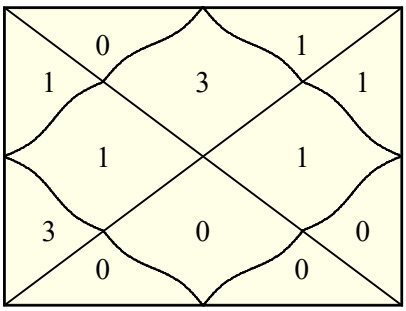

गुरु अष्टकवर्ग 12

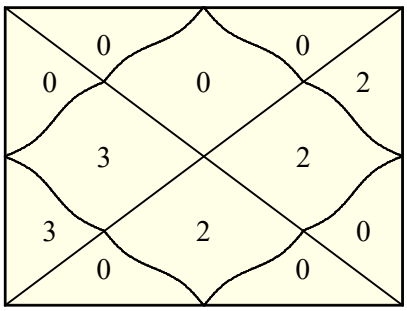

शनि अष्टकवर्ग 19

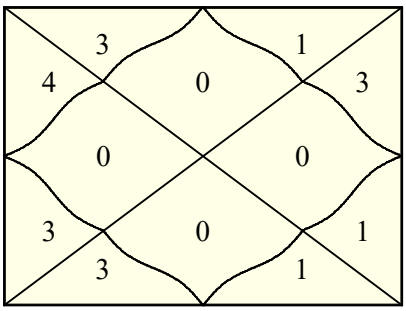

सर्व अष्टकवर्ग 88

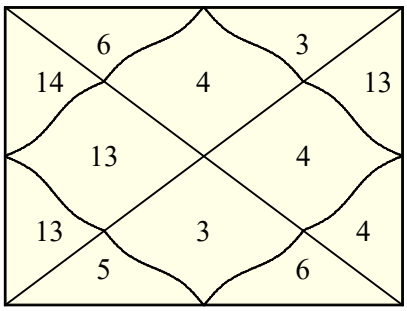

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ङुठुह्मण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

मंगल > 00:03:22 राहु > 07:03:22 गुरु > 25:03:22
शनि > 41:03:22 बुध > 60:03:22 केतु > 77:03:22
शुक्र > 84:03:22

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 0 साल, 3 महीने, 22 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
चं	र	21-11-1954	15-03-1955

मं	मं	15-03-1955	11-08-1955
मं	रा	11-08-1955	28-08-1956
मं	गु	28-08-1956	04-08-1957
मं	श	04-08-1957	13-09-1958
मं	बु	13-09-1958	10-09-1959
मं	के	10-09-1959	07-02-1960
मं	शु	07-02-1960	08-04-1961
मं	र	08-04-1961	13-08-1961
मं	चं	13-08-1961	15-03-1962
रा	रा	15-03-1962	25-11-1964
रा	गु	25-11-1964	20-04-1967
रा	श	20-04-1967	24-02-1970
रा	बु	24-02-1970	13-09-1972
रा	के	13-09-1972	01-10-1973
रा	शु	01-10-1973	01-10-1976
रा	र	01-10-1976	26-08-1977
रा	चं	26-08-1977	25-02-1979
रा	मं	25-02-1979	14-03-1980
गु	गु	14-03-1980	02-05-1982
गु	श	02-05-1982	13-11-1984
गु	बु	13-11-1984	18-02-1987
गु	के	18-02-1987	25-01-1988
गु	शु	25-01-1988	25-09-1990
गु	र	25-09-1990	15-07-1991
गु	चं	15-07-1991	13-11-1992
गु	मं	13-11-1992	19-10-1993
गु	रा	19-10-1993	14-03-1996
श	श	14-03-1996	18-03-1999
श	बु	18-03-1999	25-11-2001
श	के	25-11-2001	04-01-2003
श	शु	04-01-2003	05-03-2006
श	र	05-03-2006	15-02-2007
श	चं	15-02-2007	16-09-2008
श	मं	16-09-2008	26-10-2009
श	रा	26-10-2009	31-08-2012
श	गु	31-08-2012	15-03-2015
बु	बु	15-03-2015	10-08-2017
बु	के	10-08-2017	08-08-2018
बु	शु	08-08-2018	08-06-2021
बु	र	08-06-2021	14-04-2022
बु	चं	14-04-2022	13-09-2023
बु	मं	13-09-2023	10-09-2024
बु	रा	10-09-2024	30-03-2027

बु	गु	30-03-2027	05-07-2029
बु	श	05-07-2029	14-03-2032

के	के	14-03-2032	10-08-2032
के	शु	10-08-2032	10-10-2033
के	र	10-10-2033	15-02-2034
के	चं	15-02-2034	16-09-2034
के	मं	16-09-2034	12-02-2035
के	रा	12-02-2035	02-03-2036
के	गु	02-03-2036	06-02-2037
के	श	06-02-2037	18-03-2038
के	बु	18-03-2038	15-03-2039

शु	शु	15-03-2039	14-07-2042
शु	र	14-07-2042	15-07-2043
शु	चं	15-07-2043	14-03-2045
शु	मं	14-03-2045	14-05-2046
शु	रा	14-05-2046	14-05-2049
शु	गु	14-05-2049	13-01-2052

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : बुध अपहार : शुक्र

1.शु	08-08-2018	>>	27-01-2019	**2.र**	27-01-2019	>>	20-03-2019
3.चं	20-03-2019	>>	14-06-2019	**4.मं**	14-06-2019	>>	13-08-2019
5.रा	13-08-2019	>>	16-01-2020	**6.गु**	16-01-2020	>>	02-06-2020
7.श	02-06-2020	>>	13-11-2020	**8.बु**	13-11-2020	>>	08-04-2021
9.के	08-04-2021	>>	08-06-2021				

दशा : बुध अपहार : रवि

1.र	08-06-2021	>>	23-06-2021	**2.चं**	23-06-2021	>>	19-07-2021
3.मं	19-07-2021	>>	06-08-2021	**4.रा**	06-08-2021	>>	22-09-2021
5.गु	22-09-2021	>>	02-11-2021	**6.श**	02-11-2021	>>	21-12-2021
7.बु	21-12-2021	>>	03-02-2022	**8.के**	03-02-2022	>>	21-02-2022
9.शु	21-02-2022	>>	14-04-2022				

दशा : बुध अपहार : चन्द्र

1.चं	14-04-2022	>>	27-05-2022	**2.मं**	27-05-2022	>>	26-06-2022
3.रा	26-06-2022	>>	12-09-2022	**4.गु**	12-09-2022	>>	20-11-2022
5.श	20-11-2022	>>	10-02-2023	**6.बु**	10-02-2023	>>	24-04-2023
7.के	24-04-2023	>>	24-05-2023	**8.शु**	24-05-2023	>>	19-08-2023
9.र	19-08-2023	>>	13-09-2023				

दशा : बुध अपहार : मंगल

1.मं	13-09-2023	>> 05-10-2023	**2.रा**	05-10-2023	>> 28-11-2023
3.गु	28-11-2023	>> 15-01-2024	**4.श**	15-01-2024	>> 13-03-2024
5.बु	13-03-2024	>> 03-05-2024	**6.के**	03-05-2024	>> 24-05-2024
7.शु	24-05-2024	>> 23-07-2024	**8.र**	23-07-2024	>> 10-08-2024
9.चं	10-08-2024	>> 10-09-2024			

दशा : बुध अपहार : राहु

1.रा	10-09-2024	>> 27-01-2025	**2.गु**	27-01-2025	>> 01-06-2025
3.श	01-06-2025	>> 26-10-2025	**4.बु**	26-10-2025	>> 07-03-2026
5.के	07-03-2026	>> 30-04-2026	**6.शु**	30-04-2026	>> 02-10-2026
7.र	02-10-2026	>> 18-11-2026	**8.चं**	18-11-2026	>> 04-02-2027
9.मं	04-02-2027	>> 30-03-2027			

दशा : बुध अपहार : गुरु

1.गु	30-03-2027	>> 18-07-2027	**2.श**	18-07-2027	>> 26-11-2027
3.बु	26-11-2027	>> 23-03-2028	**4.के**	23-03-2028	>> 10-05-2028
5.शु	10-05-2028	>> 25-09-2028	**6.र**	25-09-2028	>> 05-11-2028
7.चं	05-11-2028	>> 13-01-2029	**8.मं**	13-01-2029	>> 03-03-2029
9.रा	03-03-2029	>> 05-07-2029			

दशा : बुध अपहार : शनि

1.श	05-07-2029	>> 08-12-2029	**2.बु**	08-12-2029	>> 26-04-2030
3.के	26-04-2030	>> 22-06-2030	**4.शु**	22-06-2030	>> 03-12-2030
5.र	03-12-2030	>> 21-01-2031	**6.चं**	21-01-2031	>> 13-04-2031
7.मं	13-04-2031	>> 09-06-2031	**8.रा**	09-06-2031	>> 04-11-2031
9.गु	04-11-2031	>> 14-03-2032			

दशा : केतु अपहार : केतु

1.के	14-03-2032	>> 23-03-2032	**2.शु**	23-03-2032	>> 17-04-2032
3.र	17-04-2032	>> 24-04-2032	**4.चं**	24-04-2032	>> 06-05-2032
5.मं	06-05-2032	>> 15-05-2032	**6.रा**	15-05-2032	>> 07-06-2032
7.गु	07-06-2032	>> 26-06-2032	**8.श**	26-06-2032	>> 20-07-2032
9.बु	20-07-2032	>> 10-08-2032			

दशा : केतु अपहार : शुक्र

1.शु	10-08-2032	>> 20-10-2032	**2.र**	20-10-2032	>> 11-11-2032
3.चं	11-11-2032	>> 16-12-2032	**4.मं**	16-12-2032	>> 10-01-2033
5.रा	10-01-2033	>> 15-03-2033	**6.गु**	15-03-2033	>> 11-05-2033
7.श	11-05-2033	>> 17-07-2033	**8.बु**	17-07-2033	>> 15-09-2033
9.के	15-09-2033	>> 10-10-2033			

दशा : केतु अपहार : रवि

1.र	10-10-2033	>> 17-10-2033	**2.चं**	17-10-2033	>> 27-10-2033
3.मं	27-10-2033	>> 04-11-2033	**4.रा**	04-11-2033	>> 23-11-2033
5.गु	23-11-2033	>> 10-12-2033	**6.श**	10-12-2033	>> 30-12-2033
7.बु	30-12-2033	>> 17-01-2034	**8.के**	17-01-2034	>> 25-01-2034
9.शु	25-01-2034	>> 15-02-2034			

दशा : केतु अपहार : चन्द्र

1.चं	15-02-2034	>> 05-03-2034	**2.मं**	05-03-2034	>> 17-03-2034
3.रा	17-03-2034	>> 18-04-2034	**4.गु**	18-04-2034	>> 17-05-2034
5.श	17-05-2034	>> 19-06-2034	**6.बु**	19-06-2034	>> 20-07-2034
7.के	20-07-2034	>> 01-08-2034	**8.शु**	01-08-2034	>> 06-09-2034
9.र	06-09-2034	>> 16-09-2034			

दशा : केतु अपहार : मंगल

1.मं	16-09-2034	>> 25-09-2034	**2.रा**	25-09-2034	>> 17-10-2034
3.गु	17-10-2034	>> 06-11-2034	**4.श**	06-11-2034	>> 30-11-2034
5.बु	30-11-2034	>> 21-12-2034	**6.के**	21-12-2034	>> 30-12-2034
7.शु	30-12-2034	>> 23-01-2035	**8.र**	23-01-2035	>> 31-01-2035
9.चं	31-01-2035	>> 12-02-2035			

दशा : केतु अपहार : राहु

1.रा	12-02-2035	>> 11-04-2035	**2.गु**	11-04-2035	>> 01-06-2035
3.श	01-06-2035	>> 01-08-2035	**4.बु**	01-08-2035	>> 24-09-2035
5.के	24-09-2035	>> 16-10-2035	**6.शु**	16-10-2035	>> 19-12-2035
7.र	19-12-2035	>> 08-01-2036	**8.चं**	08-01-2036	>> 08-02-2036
9.मं	08-02-2036	>> 02-03-2036			

दशा : केतु अपहार : गुरु

1.गु	02-03-2036	>> 16-04-2036	**2.श**	16-04-2036	>> 09-06-2036
3.बु	09-06-2036	>> 28-07-2036	**4.के**	28-07-2036	>> 16-08-2036
5.शु	16-08-2036	>> 12-10-2036	**6.र**	12-10-2036	>> 29-10-2036
7.चं	29-10-2036	>> 27-11-2036	**8.मं**	27-11-2036	>> 17-12-2036
9.रा	17-12-2036	>> 06-02-2037			

दशा : केतु अपहार : शनि

1.श	06-02-2037	>> 11-04-2037	**2.बु**	11-04-2037	>> 07-06-2037
3.के	07-06-2037	>> 01-07-2037	**4.शु**	01-07-2037	>> 06-09-2037
5.र	06-09-2037	>> 27-09-2037	**6.चं**	27-09-2037	>> 30-10-2037
7.मं	30-10-2037	>> 23-11-2037	**8.रा**	23-11-2037	>> 23-01-2038
9.गु	23-01-2038	>> 18-03-2038			

दशा : केतु अपहार : बुध

1.बु	18-03-2038	>> 08-05-2038	**2.के**	08-05-2038	>> 29-05-2038
3.शु	29-05-2038	>> 28-07-2038	**4.र**	28-07-2038	>> 16-08-2038
5.चं	16-08-2038	>> 15-09-2038	**6.मं**	15-09-2038	>> 06-10-2038
7.रा	06-10-2038	>> 29-11-2038	**8.गु**	29-11-2038	>> 16-01-2039
9.श	16-01-2039	>> 15-03-2039			

दशा : शुक्र अपहार : शुक्र

1.शु	15-03-2039	>> 04-10-2039	**2.र**	04-10-2039	>> 04-12-2039
3.चं	04-12-2039	>> 14-03-2040	**4.मं**	14-03-2040	>> 24-05-2040
5.रा	24-05-2040	>> 23-11-2040	**6.गु**	23-11-2040	>> 04-05-2041
7.श	04-05-2041	>> 13-11-2041	**8.बु**	13-11-2041	>> 04-05-2042
9.के	04-05-2042	>> 14-07-2042			

दशा : शुक्र अपहार : रवि

1.र	14-07-2042	>> 02-08-2042	**2.चं**	02-08-2042	>> 01-09-2042
3.मं	01-09-2042	>> 22-09-2042	**4.रा**	22-09-2042	>> 16-11-2042
5.गु	16-11-2042	>> 04-01-2043	**6.श**	04-01-2043	>> 03-03-2043
7.बु	03-03-2043	>> 23-04-2043	**8.के**	23-04-2043	>> 15-05-2043
9.शु	15-05-2043	>> 15-07-2043			

दशा : शुक्र अपहार : चन्द्र

1.चं	15-07-2043	>> 03-09-2043	**2.मं**	03-09-2043	>> 09-10-2043
3.रा	09-10-2043	>> 08-01-2044	**4.गु**	08-01-2044	>> 29-03-2044
5.श	29-03-2044	>> 04-07-2044	**6.बु**	04-07-2044	>> 28-09-2044
7.के	28-09-2044	>> 02-11-2044	**8.शु**	02-11-2044	>> 12-02-2045
9.र	12-02-2045	>> 14-03-2045			

दशा : शुक्र अपहार : मंगल

1.मं	14-03-2045	>> 08-04-2045	**2.रा**	08-04-2045	>> 11-06-2045
3.गु	11-06-2045	>> 07-08-2045	**4.श**	07-08-2045	>> 13-10-2045
5.बु	13-10-2045	>> 13-12-2045	**6.के**	13-12-2045	>> 07-01-2046
7.शु	07-01-2046	>> 19-03-2046	**8.र**	19-03-2046	>> 09-04-2046
9.चं	09-04-2046	>> 14-05-2046			

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: मंगल
दूसरा	,,	(पनप्र)	: शुक्र
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: बुध
चौथा	,,	(केन्द्र)	: चन्द्र
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: रवि
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: बुध
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: शुक्र
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: मंगल
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: गुरु
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: शनि
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: शनि
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: गुरु

गृहों का योग

बुध	प्रभावित होता है	शुक्र,शनि
शुक्र	प्रभावित होता है	बुध,शनि
शनि	प्रभावित होता है	बुध,शुक्र

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

बुध	अपेक्षित लग्न
शुक्र	अपेक्षित लग्न
मंगल	अपेक्षित गुरु,लग्न
गुरु	अपेक्षित रवि,मंगल
शनि	अपेक्षित गुरु,राहु,लग्न

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित बारहवाँ
रवि	अपेक्षित दूसरा
बुध	अपेक्षित प्रथम
शुक्र	अपेक्षित प्रथम
मंगल	अपेक्षित प्रथम,चौथा,पंचम
गुरु	अपेक्षित आठवाँ,दशावाँ,बारहवाँ
शनि	अपेक्षित प्रथम,चौथा,नवमा

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैं.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र, पक्षबल रहित है और वह अमंगल कारी प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्‌वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

संक्षिप्त में यह कहे जा सकता है कि आपकी कुंडली में बुध अशुभ गृह के प्रभाव के कारण अशुभ फल दिलाता है।

चन्द्र	-	अशुभकर्ता
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	अशुभकर्ता
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।
कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व	स्वभाव
चन्द्र	4	अशुभकर्ता
रवि	5	शुभदाई
बुध	3 6	अशुभकर्ता
शुक्र	2 7	अशुभकर्ता
मंगल	1 8	शुभदाई
गुरु	9 12	शुभदाई
शनि	10 11	अशुभकर्ता

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	बन्धु
र	बन्धु	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
बु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
शु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु	शत्रु
मं	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	बन्धु
गु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	बन्धु
श	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	अति बन्धु	अति बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	बन्धु
र	अति बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष
बु	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	निश्पक्ष	बन्धु	बन्धु	शत्रु
शु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष
मं	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	बन्धु	...	निश्पक्ष	बन्धु
गु	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	...	बन्धु
श	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
शुक्र	.	.	.	.	43.86	24.41	.
गुरु	31.24	30.59	39.45	35.59	49.44	.	37.93
शुभ बल	31.24	30.59	39.45	35.59	93.30	24.41	37.93
अशुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	-6.29	.	-1.29	-25.13	-8.12	.
रवि	.	.	.	.	-37.29	-29.41	.
बुध	.	.	.	.	-39.99	-20.55	.
मंगल	-32.44 -15.00	-11.14	-20.01	-16.14	.	-17.77	-18.48
शनि	.	.	.	.	-41.52	-22.07	.
अशुभ शक्ती	-47.44	-17.43	-20.01	-17.43	-143.93	-97.92	-18.48
दृष्टी पींड	-16.20	13.16	19.44	18.16	-50.63	-73.51	19.45
द्रिक बल	-4.05	3.29	4.86	4.54	-12.66	-18.38	4.86

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल						
13.36	8.50	49.08	9.50	59.93	59.44	59.72
सप्तवर्गज बल						
150.00	135.00	60.00	127.50	105.00	105.00	75.00
ओजयुग्मरस्यांश बल						
30.00	15.00	15.00	15.00	0	0	30.00
केन्द्र बल						
15.00	30.00	60.00	60.00	60.00	60.00	60.00
द्रिखान बल						
15.00	15.00	15.00	15.00	0	15.00	0
संयुक्तस्थान बल						
223.36	203.50	199.08	227.00	224.93	239.44	224.72
संयुक्त दिगबल						
35.63	38.56	3.46	24.77	54.01	30.23	55.52
नतोन्नत बल						
22.97	37.03	60.00	37.03	22.97	37.03	22.97
पक्षबल						
91.60	45.80	45.80	14.20	45.80	14.20	45.80
त्रिभाग बल						
0	0	0	0	0	60.00	60.00
अब्द बल						
0	0	0	15.00	0	0	0
मास बल						
0	0	0	0	0	0	30.00
वर बल						
0	45.00	0	0	0	0	0
होल बल						
0	0	0	0	0	0	60.00
आयान बल						
38.09	9.24	49.22	7.90	11.63	55.81	50.48
युध्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
152.66	137.07	155.02	74.13	80.40	167.04	269.25
संयुक्त चेष्टाबल						
0	0	24.87	56.03	33.37	42.38	6.71
संयुक्त नैसर्गीक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						
-4.05	3.29	4.86	4.54	-12.66	-18.38	4.86
संपूर्ण षड्बल						
459.03	442.42	412.99	429.32	397.19	494.99	569.63

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
459.03	442.42	412.99	429.32	397.19	494.99	569.63
संपूर्ण शडबल (रूप)						
7.65	7.37	6.88	7.16	6.62	8.25	9.49
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.27	1.47	0.98	1.30	1.32	1.27	1.90
संबन्धी स्थानक						
5	2	7	4	3	6	1

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	13.77	9.41	34.94	23.07	44.72	50.19	20.02
कष्टफल	46.22	50.53	19.59	14.16	1.37	3.14	3.86

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
13.19	9.34	5.49	1.64	.	.	.	1.91	7.77	9.14	3.48	7.64
शुक्र											
5.94	13.42	9.56	5.71	2.06	.	.	.	1.69	7.33	9.56	4.33
गुरु											
14.65	.	.	.	1.16	16.52	44.65	28.48 30.00	4.66	58.43	43.84	29.24 30.00

शुभ बल

33.78	22.76	15.05	7.35	3.22	16.52	44.65	60.39	14.12	74.90	56.88	71.21

अशुभ दृष्टी

रवि

-0.94	-14.67	-10.81	-6.96	-3.31	.	.	.	-0.44	-4.83	-10.81	-6.83

बुध

-39.21	-49.79	-34.38	-18.98	-4.38	.	.	.	-10.62	-37.05	-34.38	-9.58

मंगल

-6.15	-9.95 -3.75	-4.70	-6.02	-13.60	-9.95 -3.75	-6.30	-2.45	.	.	.	-1.30

शनि

-8.28	-12.83	-8.98	-5.13	-1.48 -11.25	.	.	.	-2.27	-8.50 -11.25	-8.98	-3.16

अशुभ शक्ती

-54.58	-90.99	-58.87	-37.09	-34.02	-13.70	-6.30	-2.45	-13.33	-61.63	-54.17	-20.87

दृष्टी पींड / द्रिक बल

-20.80	-68.23	-43.82	-29.74	-30.80	2.82	38.35	57.94	0.79	13.27	2.71	50.34

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
397.19	429.32	412.99	459.03	442.42	412.99	429.32	397.19	494.99	569.63	569.63	494.99
भावद्रिगबल											
30.00	20.00	40.00	60.00	10.00	10.00	0	50.00	20.00	60.00	40.00	20.00
भावद्रिष्टीबल											
-20.80	-68.23	-43.82	-29.74	-30.80	2.82	38.35	57.94	0.79	13.27	2.71	50.34
संपूर्ण भावबल											
406.39	381.09	409.17	489.29	421.62	425.81	467.67	505.13	515.78	642.90	612.34	565.33
भावबल के रुप											
6.77	6.35	6.82	8.15	7.03	7.10	7.79	8.42	8.60	10.72	10.21	9.42
संबन्धी स्थानक											
11	12	10	6	9	8	7	5	4	1	2	3

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

शनि मौढ्य दशा में रहा है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठ्ग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र					मित्रवस्था
बु					युवावस्था
शु				विपरीत परिस्थिती	मित्रवस्था
मं	श्रेष्ट समय				बालावस्था
गु	श्रेष्ट समय			विपरीत परिस्थिती	वृदावस्था
श	श्रेष्ट समय	सयहोग			वृदावस्था

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

रुचकयोग

लक्षण:
केन्द्र स्थान में मंगल उच्चस्थान पर

रुचक योग के कारण आप स्वस्थशरीर के सुन्दररूप बलिष्ट और आकर्षक प्रकृति के पुरुष होंगे। आप एक सच्चे, अच्छे चरित्रवान पुरुष होंगे। इसलिए पुलिस, सेना या किसी अन्य अनुशासित संस्थान के साथ आपका संबन्ध बना रहेगा। अपने जीवन में जिस किसी भी स्थान पर रहेंगे वहाँ अनुशासन को ज़्यादा महत्व दिया जायेगा। आप स्वभाव से दानशील है।आपका आयु लगभग ७० साल की होगा। आपका आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ रहेगा। हृदय से आप करुणामय होंगे। प्राचीन शास्त्रों के प्रति और पौराणिक संस्कारों के प्रति अभिरुचि रखनेवाले हैं। जीवन में कीर्ति प्रदान होगी।

हंस योग

लक्षण:
ख्द्धद्रत्द्यड्ढद्ध त्द ड्ढन्ठ्थ्द्यड्ढड्ड द्रदृद्मत्द्यत्दृद त्द ठ्ठ त्ड्ढदड्ढद्धठ्ठ.

हंस योग के कारण आप एक आदरणीय और श्रेष्ठ परिवार के अंग बनेंगे। आपकी वाणी मीठी और आपका काम सेवामय होगा। आप सुन्दर और धनी ही नहीं बल्कि भाग्यवान भी हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा; आपका पत्नी एक असाधारण महिला होगी। आपका हृदय निर्मल है और जीवन आदर्शवान होगा। आप में लावण्यमय सौन्दर्य प्रकट होगा। संपत्ति के मालिक बनने का योग है। आत्माभिमान बना रहेगा। जीवन में तत्वचिंतन के प्रति अभिरुचि जाग्रत होगी। दीर्घायु प्राप्त होगी। जीवन यशस्वी रहेगा।

मालव्ययोग

लक्षण:
जन्मकुंडली में शुक्र, स्वगृह में उच्च केन्द्रीय स्थान पर।

मालव्य योग के कारण आपका जीवन आनन्दमय और धन्य रहेगा। आपका तन मन और चिंतन निर्मलता से भरा है। आप आपके निर्मल मन के कारण सहज ही दूसरों के आकर्षण का आप केन्द्र बन पायेंगे। श्रेष्ठ कार्यों से लाभमय फल
प्राप्ति सुनिश्चित है। इच्छानुसार प्रेमपूर्ण वातावरण का सृजन करने में निपुण हैं। वाहन योग का भाग्य प्राप्त है। कलाकृति और विनोदमय कार्यों के आप रसिक हैं। आप मधुरभाषी हैं। सन्तान का सुख भी आपको प्राप्त है। जीवन में लगभग ८५ साल की आयु उपलब्ध है। नृत्य व गायन में रुचि होगा। महिलाओं का अधिक सान्निध्य अपयश कारक हो सकता है। सतर्क रहें।

ससमहायोग

लक्षणः
केन्द्रस्थान में शनि उच्च स्थान पर।

शश योग के कारण आप नियम संचालन पुलिस सेना या कोर्ट-कानूनी कार्यों से जुड़े रह सकते हैं। आप किसी भी कार्य को राजकीय तथा गौरवपूर्ण ढंग के साथ निभानेवाले हैं। आपको नौकरों या कर्मचारियों की कोई कमी न रहेगी, वे हमेशा आपके आज्ञाकारी बने रहेंगे। आप के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को सहयोग और नैतिक बल प्राप्त होगा। आपका जीवनकाल लगभग ७० साल का होगा। युवावस्था में आप के आचरण के प्रति लोग शंकास्पद नज़रों से देखेंगे। किसी संस्थान के कार्यकर्ता के रूप में अथवा विभागीय संचालन के रूप में आप की नियुक्ति की जायेगी।

राज योग

लक्षणः

चार गृह आनन्दातिरेक, मूलत्रिकोण या लग्न केन्द्र में अपने ही भाव में है ।
इस जन्मकुण्डली में अत्यधिक शक्तिशाली राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

चामरयोग

लक्षणः
लग्न केन्द्र में गुरु की दृष्टी से लग्नाधीपती श्रेष्ठ स्थितीय।

आप शिक्षित व्यक्ति होंगे और साथ ही मधुर भाषी भी। धार्मिक ज्ञान के लिये आप को ख्याति प्राप्त हो सकता है।

सुनभयोग

लक्षणः
सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

जब सुनभा योग होता है तब चन्द्र की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि रहता है। कभी-कभी उपरोक्त गृहों में से एक ही चन्द्र के सहयोग में रहता है। जो लोग सुनभा योग में जन्म लेते वे स्वभावतः धनी, बुद्धिमान और प्रसिद्ध हो जाते हैं। आप दृश्यश्रव्य कलाओं के साधक हैं। सामान्यतः आप स्वयं अपनी उन्नति का कारण बनेंगे। जीवन में सफलता और प्रगति हासिल होगा। परिस्थितियों से ऊपर उठकर, स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करेंगे।

प्रवतयोग

लक्षणः
लग्नाधीपती और बारहवें स्थान का स्वामी संयुक्तता से केन्द्रस्थान पर रहे हैं।

आप संपत्तिवान, श्रेष्ठ व्यक्ति बनेंगे। आप धार्मिक नीति के चहेते और हास्य बिखरानेवाले और किसी संस्था के उच्चपद को सुशोभित

करनेवाले व्यक्ति बनेंगे। आप भावप्रधान भी होंगे।

महालक्ष्मी योग।

लक्षणः
नवमेस्थान के स्वामी और शुक्र केन्द्र में या त्रिकोण में शक्तीशाली रहे हैं।

आप को अनुसरणीय और विश्वसनीय पत्नी प्राप्त होगी। आप को संपत्ति और वाहन दोनों का योग है। आपके विशाल हृदयी स्वभाव के लिये सम्मान प्राप्त होगा। आप किसी उच्च पद प्राप्ति के योग्य हैं और वह साध्य भी होगा।

भेरी योग

लक्षणः
शुक्र और लग्नाधिपती गुरु के केन्द्र स्थल पर और नवमें स्थान का स्वामी (मालीक) अति बलवंत स्थिती में रहा है।

आप के आमदनी के अनेक मार्ग होंगे। आप असाध्य रोंगों से मुक्त हैं। आप के मन की विशालता और धार्मिक जीवन की अभिरुचि आपको सुख के शिखर ले बनाता है । आप अपने अधिकार पद को सूक्ष्म दृष्टि उपयोग में लाते हैं। आपका परिवार ही आपके जीवन का केन्द्र बिंदु रहेगा।

अम्सावतार योग

लक्षणः
शुक्र, गुरु और शनी केन्द्र स्थान पर रहे हैं और शनी बलवंत है। लग्नस्थान चलनमय राशी से भरा है।

आप तत्वज्ञान के साथ-साथ भौतिक सुख में भी अभिरुचि रखते हैं। आपका अनेक अभिरुचियाँ आपको अनोखा स्वभाव दिलाता है। अपनी मनोकामनाओं को अपने वश रखने में आप निपुण हैं। आपने कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठ पद या नेता के पदको सुशोभित कर सकते हैं।

विद्युत योग

लक्षणः
लग्नाधीपती से केन्द्र पर शुक्र से संयोजित हो रहै है।

इस योग के कारण आपका मन सुखभोग की ओर झुका रहेगा। आप अर्थकारण के नियंत्रण विभाग से संबंध रखने वाले होंगे। हृदय से दानी स्वभाव के होंगे। सरकारी या अन्य श्रेष्ठ उच्चपद प्राप्ति का योग दिखाई देता है।

शरीर शौख्य योग

लक्षणः
लग्नाधीपती, गुरु और शुक्र चतुर्थान पे रहे हैं।

इस योग से राजकार्य क्षेत्र से आपको सहकार -और सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपकी आयु दीर्घ हैं और धन-संपत्ति से सुख प्राप्ति है।

देहपुष्टीयोग

लक्षणः
लग्नाधीपती चलायमान बलवंत गृहों के साथ रहा है।

आप बलवंत शरीर के व्यक्ति हैं। आप कठिन परिस्थिति में भी शांत और संतोषी रहते हैं। आप धनवान होंगे और जीवन सुखमय बितायेंगे।

सदसन्चार योग

लक्षणः
लग्नाधीपती चनायमान राशी में रहै है।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

सरस्वती योग

लक्षणः
गुरु, शुक्र और बुध किसी भी नीचे दिये सात स्थानों पर १, २, ४, ५,६, ९, १० तथा गुरु सहयोगी अथवा मित्रस्थान पर रहा है।

इस योग में कवि, लेखक और तत्वज्ञानी के मिश्रित दिखाई देते हैं। आप विज्ञान के सभी क्षेत्रों की जानकारी रखते हैं। आपकी कार्यशक्ति को आपके जाने माने लोग सन्मानित दृष्टि से देखते हैं। श्रेष्ठ पारिवारिक जीवन उपलब्ध है।

त्रिगृह योग

लक्षणः
तीन गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
बुध,शुक्र,शनि , सातवँ भाव में है ।

आपको सौदर्य कला में अभिज्ञ होगा और पक्षपात और असत्य कार्य में शमिल होने के लिए आप विवश होगों । आपको सौदर्य की प्रशंसा करेगा । आप यात्रा करने में दिलचस्प होगों ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। स्वभाव से आप बड़े क्रोधी है। आपके जीवन का नियंत्रण आपके जीवन साथी के हाथों में होगा। आप किसी अन्य व्यक्ति अथवा सहकार्यकर्ता से पराजित होनेवाले हैं। आप खेती और उससे संबन्धित कार्यों में अति लाभान्वित हो सकते हैं। इस कार्य में निपुण भी हैं। संपत्ति इकठ्ठी करने के कार्य के अत्याग्रही नहीं है। उपार्जन किया गया धन सही मार्ग पर ही उपयोग करने के आग्रही हैं। धन का व्यर्थ व्यय नहीं होगा। यात्रा, वाहन वगैरह के खर्च करने में आप संकोच नहीं करेंगे। अन्य समान उम्र के लोगों के लिए आप आकर्षण के केन्द्र बनेंगे। सत्य और सद्कार्यों के प्रति मन अचल रहेगा। घमंड, स्वजनों का विरोध और अपरिचितों पर विश्वास करना आपके लिए कभी हानिकारक भी हो सकता है। स्वपुरुषार्थ से भाग्योन्नति होगी। आयु के १६वें से २२वें वर्ष के मध्य कार्यारंभ हो सकता है।

कर्क चौथे स्थान पर है और इस कारण आप सौन्दैर्यवान, श्रेष्ठ और भाग्यवान होंगे। स्वभाव में श्रेष्ठता प्राप्त होगी। युवावस्था का अनन्य आकर्षण प्राप्त होगा। ज्ञान और विनय के मिश्रण युक्त व्यवहार के माध्यम से जन समूह के बीच बिना प्रयास आदर प्राप्त होगा। आप उच्चकोटि के मानस स्तर के मालिक हैं। सुन्दर और आकर्षक वस्तुएँ प्रगति से प्राप्त हुई हैं। स्वभाव की गहराई में कुछ अंश तक क्रूरता भी छिपी पड़ी है। तामसी और राजसी भोजन के शौकीन है। दूर देश की यात्रा की संभावनायें दिखाई देती हैं। विदेश वास भी हो सकता है। मानसिक चंचलता पर अंकुश लगाने का प्रयत्न होना चाहिए।

छठ्ठे स्थान पर कन्या स्थित है। कुछ स्वजनों से विरोध उत्पन्न हो सकता है। दुर्जन स्त्रियों से कलंकित होने की संभावना है। रक्त दोष के माध्यम से स्वास्थ्य पर बुरा असर हो सकता है। शास्त्रीय कार्यों में अभिरुचि पैदा हो सकती है। कीर्ति प्रदान होगी। आप संतुष्ट स्वभाव के व्यक्ति हैं। प्रतापी होते हुए भी कभी कभी निर्दयी भी बन जाते हैं। सज्जन लोग आपसे उपेक्षित होंगे और दुर्जन लोगों से सहयोग और सम्मान प्राप्त होगा। रक्त व चर्म विकार की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। जीवन में एकाध बार सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

आपकी भाग्यरेखा चलनात्मक है। अनेक परिवर्तनों की संभावनायें हैं। मकानों के माध्यम से, संस्थानों के माध्यम से संपत्ति प्राप्त होगी। विवाह के बाद भी संपत्ति का योग है। हर एक कार्य सूक्ष्म दृष्टि से देखा जायेगा। नगद खर्च करते वक्त दो बार सोचने के आदि हैं। जीवन में जहाँ भी कोई मौका प्राप्त होगा, आप उसका श्रेष्ठ तरीके से उपयोग करने में निपुण हैं। जीवनकाल की यात्रा में १८,२८,३६,४२,४६ और ५० वाँ वर्ष अति प्रधानता रखते है। स्मृति पर अंकित करनेवाली या भुलाई न जानेवाली घटनायें इन वर्षों में घट सकती हैं।

लग्नाधिपति दसवें स्थान पर हैं। इस कारण पिता के माध्यम से भाग्योदय का लक्षण है। स्वपुरुषार्थ और परिश्रम के माध्यम से राजकीय सम्मान योग उपलब्ध है। जीवन को आदर्शवादी बनाने में माता की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मित्र, बन्धु व राजपक्ष से सहयोग प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करना होगा।

आपके जन्मकुण्डली में पहला भाव के लग्न देव वित्त सम्बधी सम्पन्नता, विचारण शक्ति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

क्योंकि लग्न देव दसवी भाव के लग्न केन्द्र में उपस्थित है आपको अच्छा परिणाम मिलेगा ।

क्योंकि लग्न देव उच्च स्थान पर है आप ऊँचे अधिकार पद को अपना सकते है ।

क्योंकि मंगल गृह लग्न से प्रभावित है आप दानशील होगों ।

पहली भाव में बुध गृह का प्रभाव विध्या समंबधी विषयों के लिए उचित है ।

ऐसा देखा जाता है कि आपके जन्मकुण्डली में शुक्र गृह लग्न से प्रभावित है। मनोरजन और फुरसतों के लिए अनावश्यक पैसा और समय खर्च करना आपके लिए दोष है ।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भावाधिपति के सातवें स्थान पर होने से वेद शास्त्रों में नैपुण्यता प्राप्त होगी। अन्य परिवार के लोगों के साथ निकट के संबन्ध, समूह के बीच शंका-कुशंका पैदा होगी। जीवनसाथी में मनोवेदना उत्पन्न करने वाले कार्य आप से होने की संभावनायें हैं। चिकित्सा या औषधि से संबन्ध रखने वाले काम लाभप्रद हो सकते हैं। माता और जीवन साथी से वैचारिक मतभेद रह सकता है।

क्योंकि बुध गृह और दूसरी देव साथ उपस्थित है, आप गणितशास्त्र और साहित्य क्षेत्र में नाम कमा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति सातवें स्थान पर होने से बालावस्था में अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। जीवन के उत्तरार्धकाल में समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होगी। स्वतंत्र व्यापार आप के लिए लाभदायक नहीं है। श्रेष्ठ अफसरों या बडों के मार्गदर्शन का लाभ उठाकर प्रगति कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों के आधीन रहकर काम करना अच्छा होगा। आप की सेवा के कारण उनसे प्रीति प्राप्त होगी। किसी चीज़ के नष्ट होने या खो जाने का आरोप आप पर लगाया जा सकता है। सरकार या न्यायालय का निर्णय आपको कष्टदायी हो सकता है। धन का अनुचित मार्ग से संग्रह करना महंगा पड़ सकता है। किसीसे अधिक निकटता और गहरी मित्रता बदनामी के अतिरिक्त कुछ और न दे पायेगी।

तीसरे स्थान पर केतु के रहने से आपमें अपार बुद्धिशक्ति , सुन्दर व्यवहार और आकर्षक व्यक्तित्व बना रहेगा।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्म पत्रिका में चौथे भावाधिपति छठे भाव में स्थित हैं। आप जल्दी नाराज़ हो जाते हैं। अन्य के दिल को दुखाने और अरुचि पैदा करने का स्वभाव है। अयोग्य और विचित्र विचारधारा के प्रचारक हैं। जीवन में कहीं शाँति और आराम से बैठने के आदि नहीं हैं। चंचल मन के व्यक्ति हैं। कहीं एक जगह स्थाई टिक नहीं सकते।

चन्द्र चौथे भाव का स्वामी है। इस कारण हृदय में सदा चंचलता और व्याकुलता रहेगी। आप पुरुष हैं और इस कारण सतर्क रहना आपके लिए लाभदायक होगा। अभी की परिस्थिति में किसी के सहारे की या आश्रय की आवश्यकता लगती है। यथायोग्य मार्गदर्शक प्राप्त होगा। मानसिक स्थिरता प्राप्त होगी। स्वनिवास के लिए उत्तम मकान का निर्माण करना अथवा प्राप्त करना सरल होगा। बालावस्था में विद्याध्ययन में, युवाकाल में, कार्यक्षेत्र में और गृहस्थी जीवन में सफलता प्राप्त होती रहेगी। बुढ़ापे में भी मन युवा रहेगा।

बृहस्पति आपके चौथे भाव में स्थित होने से आप दार्शनिक होने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों से और घर
के बड़ों से आपको सहायता प्राप्त होगी। शत्रु से सावधान रहना उचित होगा। आपको आदर, भाग्य और आत्मबोध प्राप्त होंगे।

आपके सुख और सम्मानपूर्ण जीवन को देखकर अन्य लोग ईर्ष्या करेंगे। आप तत्वशास्त्र, वेदांत और लौजीक जैसे विषयों में अभिरुचि रखनेवाले हैं। मातृ सुख और संपत्ति सुख की उत्तमत्ता परिलक्षित होगी।

मंगल ने उच्च स्थान ग्रहण किया है। इस कारण किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी अमूल्य वस्तु की खरीदी में घबराने की ज़रूरत नहीं। मंगल के प्रभाव से अशुभ ग्रहों के आसुरी प्रभाव में क्षीणता का अनुभव किया जायेगा।

चौथे स्थान पर बृहस्पति के अनुकूल स्थिति में रहने से अन्य बुरे फलों के होने की संभावना न्यून हो गई है। भू, भवन, वाहन, संपत्ति और माता विषयक सुखों में वृद्धि होगा।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से बच्चों के कारण अथवा स्वास्थ्य के कारण समस्या खड़ी होगी। वायु विकार अथवा श्वासरोग से सदा बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। संतान सुख प्राप्त होगा। मानसिक उद्वेग की संभावना है। इस कारण कुछ अंश तक आप का स्वभाव क्रोधी होगा।

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

चन्द्र छठ्ठे स्थान पर रहा है। सामान्य आयु के मालिक हैं। उदर रोग बार-बार सतायेगा। आप जीवन में समझौता नहीं कर पायेंगे। आप सहनशीलता में कच्चे रहे हैं। सर्दी जुकाम संबन्धी बीमारी से बचकर रहना लाभप्रद होगा।

छठे भावाधिपति के सातवें स्थान पर रहने से विवाह संबन्धी समस्याओं का सामना करना होगा। आप धैर्यशील, कीर्तिवान और धनवान व्यक्ति हैं। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। कौटुंबिक कलह के कारण मानसिक उद्वेग सहना होगा। जीवन साथी से वैचारिक मतभेद विकराल रूप न ले पाये, इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

छठा देव शनि गृह के साथ उपस्थित है । आपको धन सम्पति के नष्ट के बारे में अनावश्यक परेशनी होगा ।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर है। कौमार्यकाल में और युवावस्था में जीवन उत्साहपूर्ण और पौरुषपूर्ण रहेगा। इस कारण महिलायें आप से आकर्षित होगी। 'आप सुन्दर व्यक्तित्व के भंडार हैं'। ऐसी परिचित लोगों के बीच चर्चा रहेगी। स्त्री और पुरुष दोनों आप से आकर्षित रहेंगे। प्रख्यात और प्रशंसनीय परिवार की सुंदर सुकन्या का पाणीगृहण करने का सद्भाग्य प्राप्त है। एक-दूसरे के सहयोग से जीवन पथ पर आगे बढ़नेवाले दंपत्ति बनेंगे। परिवार के मध्य पूरी तरह मान और आदर प्राप्त होगा। जीवन संगिनी के बारे में सभी के बीच अपना मंतव्य अभिव्यक्त करने में आप राजी नहीं हैं। मन के विचारों को मन में ही संग्रहित करने के आदि हैं। अप्रतिक्षित संजोगों के अधीन होकर विवाहित होना पड़ेगा। पुर्नःविवाह की कुछ संभावना है। आप व्यवहारकुशल और स्वप्रयत्न से जीनेवाले व्यक्ति माने जायेंगे। विदेश निवास करने की संभावना है। राजकरण में अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। सक्रिय रहने के लिए दिए गये कार्य में सफलता की संभावना है। लोगों के सहयोग से श्रेष्ठ पद सुशोभित करने में समर्थ हैं। अन्य लोगों से मान्यता प्राप्त होग। शिरोरोग के प्रति लापरवाह न रहते हुए योग्य डोक्टरी सलाह लेना बुद्धिगम्य माना जायेगा। चश्मे का उपयोग आप के लिए अनिवार्य हो सकता है।

पश्चिम दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

आपकी पत्नी गेहुंवर्णी, ऊँचे कद की सौन्दर्यवती युवती होगी।

बुध सातवें स्थान पर है। अनन्य कार्यशक्ति प्रदर्शित करने में शक्तिमान है। आपके सहवास और परिचय प्राप्ति के अनेक इच्छुक होंगे। आप रसिक स्वभाव के व्यक्ति हैं। हर कार्य कलात्मक दृष्टि से पार लगाने के आदि हैं। वस्त्र परिधान की कला में निपुण हैं। कानून और नियम संविधान के अभ्यास के रुचिकर हैं। साहित्य और लेखन कार्य में प्रगति होगा। ठीक सोचने के बाद, धनवान कन्या से विवाहित होने की संभावना रखते हैं। अनेक अभिलाक्षाँए जन्म लेगा । आप व्यवहार कुशल हैं। शारीरिक संबन्धों की अपेक्षा मानसिक संबन्धों में अधिक रुचि रहेगा।

शुक्र सातवें स्थान पर है। जिसके प्रति अनुराग होगा, उनसे धनिष्ठ संबन्ध स्थापित होंगे। आप अनुरागी और स्नेह संपन्न पुरुष है। यह सब होते हुए भी कलह कार्य में पड़े तो आप से कोई बुरा नहीं। समर्पण भाव युक्त जीवनसाथी उपलब्ध होगा। आप का जीवनसाथी आपके लिए आत्मीयता प्रकट करने वाली व्यक्ति हैं। पारिवारिक जीवन संतोषपूर्ण रहेगा। खण्डनात्मक कार्यों से दूर रहना आप के लिए अनिवार्य है। दूसरों के मन को जीतने वाले सुन्दर व्यवहार करने वाले पुरुष हैं। जीवन की अपूर्व सफलता और व्यक्तित्व सफलता की चाबी इसी में छिपी है। स्वास्थ्य को बिगाड़नेवाली आदतों से दूर रहें तो अधिक लाभदायक होगा। मादक पदार्थों से बचते रहना ही आपके लिए योग्य होगा।

शनि सातवें स्थान पर है। विवाह में विलंब और कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के बाद पति पत्नी एक दूसरे के अधीन रहेंगे। जीवनसाथी के हाव-भाव, रूप-रंग, आकृति-प्रकृति इत्यादि की कल्पना मन में है जो आप किसी के सामने व्यक्त नहीं करते। आप का विवाह संजोगाधीन हुआ है। आप एक परिश्रमशील कार्यकुशल पुरुष है। आप का निवास स्थान दूर देश में होना संभव है। सुदृढ़ वैवाहिक जीवन प्राप्त होगा। राष्ट्रीय कार्यों में सफलता मिल सकता है। अनेक सम्मानपूर्ण पद की उपलब्धी दिखाई देते है। सिरदर्द से सावधान रहना आवश्यक है। सिर रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह-सूचना प्राप्त करना आपके लिए अनिवार्य है। विवाह की बात एक से अधिक स्थानों पर होना संभव होगा। जीवन साथी में गांभीर्य व प्रौढ़ता होगी।

सूर्य गुरु के स्वाधीन रहा है। इस कारण आपकी पत्नी आत्मीय स्वभाव की ओर परिपक्व व्यक्तित्वपूर्ण व्यक्ति होगी। जीवन में योग्य मार्गदर्शन मिलता रहेगा और इस कारण आप भाग्यवान समझे जायेंगे।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से माता पिता से मिलनेवाले सुख में न्यूनता का अनुभव होगा। अनेक अपवादों का सामना करना पड़ेगा। व्यावसायिक सफलता के लिए अधिक कर्मठता की आवश्यकता है। सर्वोच्च सम्मान से वंचित रह सकते हैं।

सूर्य आठवें स्थान पर है। अधिकारियों को और अन्य व्यक्तियों को राजी रखना आपके लिए कठिन कार्य बनेगा। जीवन में अनियमितता और क्षोभ युक्त कुछ संजोग उत्पन्न होंगे। आपकी आँखों में खास प्रकार की झलक दिखाई देगी।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति चौथे स्थान पर है। अनन्य मलकीयत और आलीशान हवेली का अधिकार आपके हाथों में होगा। इस कारण व्यक्ति आपको भाग्यवान माना जा सकता है। स्थायी मलकीयत के माध्यम से धन संपन्न होगा। माता के निमित्त धन लाभ होगा। 'मंत्री सेनापतिर्भवेत् ...पुण्यवान .... साहसी क्रोध वर्जितः'

राहु आपके नौवे भाव में स्थित होने से आपका सहयोगियों के साथ के संबन्ध में मलिनता उत्पन्न होगी। अकारण आरोपित होने की संभावना दिखाई देती है। अन्य लोगों से नियंत्रित होने का प्रयास होगा। आप अपने पिताजी के प्रति दोषपूर्ण भाव प्रकट करेंगे। धार्मिक संस्थाओं के प्रति भी आप घृणा करेंगे। 'धर्मार्थनाः किल धर्मगे तमे.....'

नवमें भावाधिपति ने श्रेष्ठ स्थानग्रहण किया है। आप अनेक शुभ फलों को प्राप्त करनेवाले हैं। लगातार प्रगति के मार्ग पर बढ़ने का योग है।

नवमा भावाधिपति पापयुक्त संजोगों से चारों ओर से ढका गया है। अन्य गृहों के सान्निध्य से अनुकूल स्थिति के बदले प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होगी। फिर भी आंशिक सुख की अनुभूति हो सकता है।

पीला रंग और पुखराज पत्थर जडा हुआ आभूषण धारण करने से आपकी चिन्तन शक्ति बढ़ेगी। जन्म पत्रिका में जो गृहदोष होते हैं वह इन रंगों को धारण करने से क्षीण होते हैं। संतान प्राप्ति के लिए भी यह पत्थर लाभप्रद होता है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपको जन्मकुण्डली में जसवी भाव के स्वामी पारासरा होरा के श्लोकों के अनुसार आपको पत्नी के द्वारा अतीव संतोष प्राप्त होगा । आप धार्मिक है । आपको उत्तम बोली की शाक्ति है । आप सत्य में विश्वास रखते है और स्वंय एक मार्गदर्शी बनेगा ।

दसवी भाव मकर राशी है । यह चिनह् आपको शक्ति और अधिकार प्रधान करता है । यह आपको व्यवहारिक, आत्मनिर्भर बनाती है और गहराई से चितंन करने की शक्ति प्रधान करती है । आप विशाल परियोजन को अच्छी तरह संभाल सकते है । यह चिनह् राजनीतिक नेता और राज्य की मंत्री को भी सूचित करता है । मकर राशी का शासक शनि है और यह लोहार खाना, हस्त संम्बधी उघोग , सेवा विभाग, खनन और अन्य व्यापार, जेल में उघोग , और प्रवर्तन कार्यालयों को सूचित करता है । आपका उघोग नील रंग से सम्बधित होगा ।

दसवी भाव में उपस्थित मंगल गृह आपको जनसमूह में प्रसिद्वि की अभिलाषा प्रधान करता है । मंगल गृह इंजीनियरिंग और शिल्प कला विज्ञान को नियंत्रित करता है और यह उधोग क्षेत्र आपके लिए उचित है ।

मंगल गृह मकर राशी में उपस्थित है । अगर लोग आपको अप्रवीण कहे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि आप हमेशा कर्मों को दूसरे से करवाना चाहते है, और अपने आप नहीं । किसी संयुक्त संस्था के उच्च श्रेणी में काम करने पर आप सफल होगा । आपाका व्यापार या उधोग क्षेत्र चाहे कितना छोडा हो आप उसे एक संयुक्त संस्था के रुप में चलाना चाहते है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

दूरसंचार, उपगृह, इन्टरनेट्, नेट्वर्क स्वास्थ्य अधिकारी, विदेशी का माल देश में लाना, आयात और निर्यात करना, व्यापार, राजप्रतिनिधि, राजनीतिक सेना । गुल्म, वस्त्र, रेशा, प्रकाश विज्ञान, विक्रियक।

दसवी भाव का अधिपति उमंग बरा और संतुष्ट दिखाई पड़ता है । यह आपके जीवन चर्य और पेश के लिए भाग्य की सूचना है ।

गुरु दसवी भाव के रुप में उपस्थित है । यह आपके जीवन गाति और पेश को मजबूत करता है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवें भावाधिपति के सातवें स्थान पर रहने से विवाह के बाद अनेक प्रकार की प्रगति की संभावना है। जीवनसाथी की अभिरुचि की ओर ज़्यादा झुकने के आदि हैं। स्वभाव से आप एक श्रेष्ठ और उदार व्यक्ति हैं। विवाह के बाद आर्थिक उन्नति विशेष रूप से होगी।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति चौथे स्थान पर रहने से माँ के माध्यम से मिलने वाले सुख में न्यूनता रहना संभव होगी। भू, भवन और वाहन संबन्धी कार्यों में पर्याप्त संघर्ष करने के बाद ही सफलता मिलना संभव होगी।

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के
विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक् हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

∇ (08-08-2018 >> 08-06-2021)

बुध दशा में शुक्र कि अन्तर्दशा के दौरान आप अपने आप को स्थिर और आनंदी अनुभव करेंगे। इस समय में आप अपने समाज में एक आदरनीय व्यक्ति के रुप में जाने जाऐं गे। शारिरीक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। लोकोपकारी कार्यो में आपको आनंद प्राप्त होगा। घर में पूनर्रचना का कुछ काम चल सकता हैं। आपके परिवार में कुछ शुभ कार्य जैसे हो सकता हैं।

∇ (08-06-2021 >> 14-04-2022)

बुध दशा में सूर्य कि अन्तर्दशा मे आपको अनुभव होगा कि आपकी उपलब्धीयां आपको खुशियां प्रदान कर रही हैं। आपके कुछ रिश्तेदार और मित्र किसी संकट में हो सकते हैं और प्रेरणा हेतू वे आपके पास आ सकते हैं। आप महत्वपूर्ण पारिवारीक और सामाजिक कार्यक्रमों द्रद्र में भाग लें गे। नई संपत्ती खरीदने और यात्रा के भी संकेत हैं। आप अपने शौक पूरे करने में समय बिताऐंगे।

∇ (14-04-2022 >> 13-09-2023)

बुध दशा में चंद्र कि अन्तर्दशा आपको चर्म रोग दे सकती हैं और आपको इससे काफी सावधानी बरतनी हैं। आप अपने पालतु जानवरों के साथ समय बिताऐंगे। उसी समय आपको अटपटे जानवरों द्वारा संक्रमण से सुरक्षित रहना चाहियें ।

∇ (13-09-2023 >> 10-09-2024)

बुध ग्रह में मंगल कि अन्तर्दशा आपको सरदर्द उत्पन्न कर सकता हैं या सर में मामुली चोट आ सकती हैं। निवास से संबंधीत स्थानांतर हो सकता हैं। इस समय अवधी के दौरान डकैती से सावधान रहना चाहियें ।

∇ (10-09-2024 >> 30-03-2027)

बुध दशा में राहू कि अन्तर्दशा आपके विरोधी आपको अप्रत्याशित रुप से मुसिबत में डाल सकते हैं। शस्त्रधारी लोगों के साथ समय ना बिताने के लिये आपको सावधान रहना चाहिये. बिजली के उपकरण और आग से आपको सावधान रहना चाहियें । अंधेरे में यात्रा करना आपको टालना चाहियें। आपको सिखने में रुची रहेगी और पैसों के व्यवहार में आप चंतूर रहेंगे। आपकी वित्तीय स्थिती समाधानकारक रहेगी।

∇ (30-03-2027 >> 05-07-2029)

बुध ग्रह में बृहस्पती कि अन्तर्दशा में आप आनन्दी बने रहेंगे। आपका शारिरीक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप हमेशा आनन्दी रहेंगे। आप दुसरों का सम्मान करने में संकोच नहीं करेंगे और इस वजह से आपको दुसरों से मदद मिलेगी। आप विवाह जैसे शुभ कार्यों में शामिल होंगे।

∇ (05-07-2029 >> 14-03-2032)

बुध दशा में शनी कि अन्तर्दशा के दौरान आपको अपने भितर कुछ अच्छे बदलाव दिखाई देंगे। आप और भी लालची और भौतीक सुखवादी बन सकते हैं। आप आलस्य का अनुभव भी कर सकते है।

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती हैं तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएं आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछड़ना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शाँति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

∇ (14-03-2032 >> 10-08-2032)

केतू दशा में केतू कि अन्तर्दशा के दौरान, आप साधारण असुविधा महसूस कर सकतें हैं। पूरी स्थिती पर सवाल उठाना और विवेचन करना आपको टालना चाहियें। आयआरएस या अन्य किसी शासन संस्था के मुद्दे हो सकते हैं। परिस्थितीयों के बावजूद आपको खूद पर नियंत्रण रखना चाहियें ।

∇ (10-08-2032 >> 10-10-2033)

केतू दशा में शुक्र कि अन्तर्दशा के दौरान आपको अपने व्यापारी भागीदार या जीवनसाथी से विवाद का सामना करना पड सकता हैं।

अपने जीवनसाथी से प्रतिस्पर्धा बढ सकती हैं। आग और बिजली का उपयोग करते समय सावधान रहें।

∇ (10-10-2033 >> 15-02-2034)

केतू दशा में सूर्य कि अन्तर्दशा के दौरान, आपको अधिकारीयों के प्रश्न के उत्तर देने पड सकते हैं। आप ऐसा महसूस करेंगे कि आपके द्वारा किये जाने वाले कार्यो पर प्रतिबंध लगाया जा रहा हैं। अतित में आपने जो बोया हैं उसके परिणाम अभी दिखने वाली कुछ स्थितीयां उत्पन्न हो सकती हैं। आपका स्वाथ्य ठिक बना रहने कि सुनिश्चिती करें और आपको उसके लिये चिंता करनी चाहीयें । फलदायक लंबी दूरी यात्रा हो सकती हैं।

∇ (15-02-2034 >> 16-09-2034)

केतू दशा में चंद्र कि अन्तर्दशा के दौरान, आपके आय और व्यय में वृद्धी होगी। प्रसन्नता और अप्रसन्नता का दर बराबर बना रहेगा। आपमें अपने किसी करिबी और प्रियजन से दूर होने कि प्रवृत्ती उत्पन्न हो सकती हैं। आपके परिवार में विवाह जैसे शुभ कार्य हो सकतें है। आपको अध्ययन में रुची रहेगी।

∇ (16-09-2034 >> 12-02-2035)

केतू दशा में मंगल ग्रह कि अन्तर्दशा के दौरान, शाब्दिक विवाद कि संभावना हैं। आपके द्वारा घर में अनिष्ट विवादों में पडने कि प्रवृत्ती पर अंकूश लगाना चाहियें । जो आपको चिंता में डाल सकते हैं, एसे धर्मभ्रष्ट लोगों से सावधान रहें।

∇ (12-02-2035 >> 02-03-2036)

केतू दशा में राहू कि अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपने स्वास्थ्य और शांती के बारे में अधिक सोचना पड सकता हैं। मानसिक चिंता करने सें अच्छा है कीं आप हमेशा प्रार्थना और ध्यान करने के प्रयासो में लगे रहें।

∇ (02-03-2036 >> 06-02-2037)

केतू दशा में बृहस्पती की अन्तर्दशा के दौरान, आप लोकप्रिय और सफल लोगों के संपर्क में आयेंगे। अन्य लोग अपसे सलाह लेने आयेंगे। सम्मान और स्वीकार मिलने के कारण आप खुश रहेंगे। बच्चों के साथ रहने से आपको आनंद मिलेगा और उनसे आपको बहुत फायदा होगा।

∇ (06-02-2037 >> 18-03-2038)

केतू दशा में शनी कि अन्तर्दशा आपको अपने स्वास्थ्य पर जादा ध्यान देने के लिये प्रवृत्त करेगी। बहु प्रयोजनों के लिये लंबी यात्रा हो सकती हैं।

∇ (18-03-2038 >> 15-03-2039)

केतू दशा में बुध कि अन्तर्दशा के दौरान, आप अपने मित्रों के साथ खुश रहेंगे जो लंबे समय तक आपके साथ रहेंगे। आप अधिक उद्यमी रहेंगे और मन चौकन्ना रहेगा। आपकि वित्तीय परिस्थीती स्थिर रहेगी और उसको लेकर आप खुश रहेंगे। आप अपनी युवा पिढी कि सफलता को लेकर खुश रहेंगे।

ग्रह दोष और उपाय

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने

वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में दशावाँ स्थानपर रहा है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

उपचार

जब तक आपके कुंडली में कुज दोष नहीं हैं आपको किसी तरह के कोई उपायों को करने कि जरुरत नहीं हैं।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही।

राहु दोष कें उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहुदोष न होने सें, आपने कुछ उपाय करनें की जरूरत नही।

केतु दोष

इस जन्मकुंडली में केतु दोष नही है।

केतु दोष हेतू उपाय

आपकी जन्मकुंडली में केतु दोष न होने से , आपने उपाय करनें की जरूरत नही।

परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने हस्त नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र के चन्द्र है । समालोचन करने पर आप गौरव भाव प्रकट करेगों । यह आपके सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगा ।
जन्म नक्षत्र का आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । हस्ता नक्षत्र होने के बावजूद राहु, शनि और केतु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार और कार्य में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई देगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप अपने बुद्वि के साथ स्वार्थता को भी नियुक्त करेगा । इस समय अप दूसरों के गलतियों को संकेत करने में दिलचस्प होगें । जीवन में आपको ऊचाई और नीचाई के अनुक्रमण का अनुभव होगा । अपने धर से दूर रहना पड़ेगा । इस समय लाभहीन चीजों की ओर साधारण रुप से ज्यादा झुकाव होगा ।

कन्या जन्म राशी का अधिपति बुध है । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आपको विधा और व्यवहार के बारे में व्यक्त अनुमान प्रस्तुत करना पडेगा । आपका विचार के लिए लाभदायक है, यह जानना जरुरी है । धार्मिक कार्यों का परिणाम पाने में देर लगेगा । स्वाती, अनुराधा, मूल, अशविनी, भरणी, और कृत्तिका नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में चन्द्र और माता देवी की प्रार्थना करता लाभदायक है । माता देवी की आर्शिवाद के लिए हस्ता, श्रावण और रोहिणी नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना चाहिए । हस्ता नक्षत्र और सोमवार जिस दिन साथ आता है, उस दिन विशुद्वता के साथ उपवास रखना उचित होगा ।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए रोज चन्द्र की प्रार्थना करना चाहिए । इसके अलावा रोज पुराणों और धार्मिक पुस्तकों का पारायण करना चाहिए । वस्त्रों को चुनते समय सफेद और हरे रंग को ज्यादा महत्व देना चाहिए । यह चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए सहायक होगा ।

इसके अलावा गृह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य आपके ऊपर भाग्य को वर्षित करेगा ।

हस्त नक्षत्र का अधिपति सूर्य है । सूर्य को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊँ विभ्राद् भ्रिहत्तपिभतु सौम्यम् मद्धायुर्धदध
ध्यज्ञपता वर्विहुतं वातजुतोयो
अभिरक्षतित्मन प्रजाः पुपोष पुरुध विराजति

२ ऊ सवित्रे नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः हस्तनक्षत्र का जानवर गाय का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्वि प्राप्त होगा ।हस्त का औधोगिक पेड, अंभषम् पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , कौआ को पीड़ा नहीं देना चाहिए । हस्त नक्षत्र का मूलतत्व अगनि है । अगनि देव की पूजा करने से और दिया जलाने से इस जन्म नक्षत्र के लोगो को भाग्य प्रधान करेगा ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :बुध

अभी आप बुध दाश से गुजर रहे है ।

दाश के अधिपति का हानिकारक संयोग है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर बुध दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपका अपेक्षपाती मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

बुध दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब बुध कमज़ोर है आप अपने काम में इच्छानुसार की तृप्ति और सतोष नहीं पा सकते । शुभ उत्सव या भोज में अप्रत्याशित रुकावट आने की संभावना है ।

इस समय ततसंगत निर्णयों के लेने और निबाहेन में आपको देर लगेगा । अपने क्षेत्र में आपको सहायता आवश्यक पड़ेगा । सभ कुछ आपके इच्छा के अनुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णयों को लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

व्यक्तिगत साबधों को निर्वाह करने में आपको मुसबित लगेगा । आपका वाक्य और कर्म (कार्य) प्रतिकूल परिणामों को उत्पन्न कर सकता है । सभ कुछ आपके इच्छानुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए ।बुध को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर बुध दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

हरा रंग बुध गृह का प्रिया रंग है । इसलिए बुध गृह को शान्त कराने के लिए हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । बुधवार को और बुध गृह की पूजा करते समय हरे रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति

अपने विचार और कार्य में श्रेष्ठ सामिप्य रखने से बुध दाश के हानिकारक प्रभावों से आप बच सकते है । शिक्षा सम्बधा अनुशासन जैसे अध्ययन, लेख था विधा में शमिल होने से आप बुध को शान्त कर सकते है । अपने संवाध विधा, और नए ज्ञान को पुष्ट करने पर लाभ उठा सकते है । नए नए भावाओं को सीखने की कोशिश करे और नए ज्ञान के क्षेत्रों में प्रवेश करने की कोशिश करें । अनोके शब्दों का प्रयोग करना और पंडितों के वाक्यों की अनुसरण करना बुध दाश में आपके लिए सहायक है । पुराणों और धर्मिक पुस्तकों को प्रतिदिन पठना आपके लिए लाभदायक है ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । बुध गृह को शान्त करने लिए आपको बुधवार में उपवास रखना चाहिए ।

उपवास केमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
बुध गृह को शान्त करने के लिए सोना,हारा रत्न, बुध गृह का मुर्ति आदि को दान देना चाहिए । शक्कर, दही, दाल और इनसे बनी खाध्य पदार्थ दान देना लाभदायक है ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 14-3-2032 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :केतु

आपका केतु दाश 14-3-2032 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थानो के अनुसार आपको प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पडेगा । जिस जोखिम में आप शमिल हो,जीत के लिए आप डरते रहेगों । इस समय आपके कल्पनाशील अर्न्तज्ञान सभी जगह अपूर्ण हो जएग । क्योंकि यह आपके

चिन्ता एकाग्र करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ेगा, आपके समझने कि शक्ति भी कम हो जाएगा ।

केतु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब केतु कमजोर है प्रतिकूल निर्णय लेने की झुकाव होगा । अपनी आवशायकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर करना पड़ेगा । स्वंय रक्षा की आवश्यकता को आप कम मूल्य देगों ।

आप इस समय पूर्वकाल में जीना चाहते है । अपने कार्यों में एकान्त बनाए रखने की कोशिश करना चाहिए । आपका शरीरिक उष्णा अधिक हो जाएगा ।

आपको पचाने से सम्बधित रोगें का अनुभव होगा ।यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए ।

जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद उपयोग करने का झुकाव होगा । वैवहिक जीवन कायम रखने के लिए आपको संर्घष करना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें केतु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने पर आप केतु को शांन्त कर सकते है । आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते है । मंगलवार में आपको लाल रेग का वस्त्र पहनना चाहिए । पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति

केतु दाश में आपका जीवन केतु के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । सैद्वान्तिक ज्ञान और आध्यामिक जीवन शैली आपके मन को केतु दाश के मुसीबतों से बचने के लिए सहायक होगा । पंडित लोगें के उपदेशें और निर्देशों को स्वीकार करना चाहिए । यह आपके मानसिक शक्ति को बढ़ाने के लिए सहायक होगा । प्रंलवित किए गए धार्मिक अनुष्ठानों को फिर से शुरु करना, मन्त्रों को पठना, ध्यान के लिए कुछ समय व्यस्थ करना और क्रम के अनुसार जीवन शैली का पालने करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है । अपने परिवार के अन्दर या बाहर के लोगें से झगडा नहीं करना चाहिए । रिपायत या छूट करने के लिए हिचकना नहीं चाहिए । वाहनों में जाते समय ध्यान रखना चाहिए । पूजा - पाठ या परिहार कर्म करते समय आपका उपस्थित होना बहुत महत्वपूर्ण है ।

देवता भजन

केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजा करना चाहिए । आपने जन्म नक्षत्र में गणेश होम करना, वृत लेकर पूर्ण चन्द्र (चतुरती) के चार दिन बाद गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगीत करना आदि से केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । कुछ ज्योतिषियाँ चामुण्डी देवी की पूजा करने के लिए सलाह देते है । जिनका केतू ओज राशी में है उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु युगम्म राशी में उनको चामुण्डी देवी की पूजा करना चाहिए ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
केतु को शान्त करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि. लाल था काला रेशम आदि दान कर सकते है । सोना, चाँदीया पंच लोहो से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 15-3-2039 तक आचारण करना चाहिए ।

नाम : **Poobalan Naidoo** (पुरुष)
जन्म राशी : **कन्या**
जन्म नक्षत्र : **हस्त**

गृहस्थिती : 2-मे- 2021
अयनांश : चित्रपक्ष

वेधफल इस समय के ग्रहों की स्थिति और जन्मपत्रिका में ग्रहों की स्थिति पर तुलना करके प्रक्षेपित किये गये हैं। ज्योतिष शास्त्र में सूर्य, बृहस्पति और शनि की गतियों की बड़ी प्रधानता होती है। हमारे जीवन में कभी इनका प्रभाव प्रतिकूल, कभी गुणदोष विहीन और कभी कभी अनुकूल भी होता है। यहाँ पर निकट भविष्य का फल बताया जाता है।

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान गृहण करता है।

∇ (14-अप्रेल-2021 >> 14-मे-2021)

इस समय सूर्य आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

इस समय आपके मन में कुछ पीड़ा होता रहेगा। सामने आये प्रश्नों का धैर्य के साथ सामना करने की तैयारी करना पड़ेगा। उदर रोग से मुक्त रहने का प्रयास कीजिए। गलत धारणाएँ आपके मन को अशान्त बनायेगा। अकारण क्रोधित होना पड़ेगा। यात्रा में अवरोध और परेशानियाँ आयेंगी।

∇ (14-मे-2021 >> 13-जून-2021)

इस समय सूर्य नवमा भाव का सक्रमण करेगा

बड़प्पन का अनुभव होगा। क्रोध और निराशा प्रकट होगी। योग्य और अयोग्य का निर्णय करने में भूल होगी। अभिमान और गौरव को नष्ट करने वाले नीच कार्य का ओर ध्यान आकर्षित होगा। आत्मसंयम से ही बचा जा सकता है।

∇ (13-जून-2021 >> 13-जूलाई-2021)

इस समय सूर्य दशावाँ भाव का सक्रमण करेगा

आप को फिर एक अच्छी परिस्थिति प्राप्त होग। सभी क्षेत्रों में सामान्य लाभ होता रहेगा। परिवार के अन्य व्यक्तियों को अनेक लाभ होंगे। कुछ ही सप्ताहों के अन्दर आपको प्रधान व्यक्तियों के बीच में स्थान प्राप्त होगा। अनेक व्यक्तियों से आपको प्रोत्साहन मिलता रहेगा।

गुरु का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

∇ (7-अप्रेल-2021 >> 14-सितंम्बर-2021)

इस समय गुरु छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

आपको सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त होंगा फिर भी अस्वास्थ्य सताता रहेगा। बृहस्पति की प्रतिकूलता और कुछ समय तक रहेगी। पर उसकी अनुकूलता आपको जल्दी प्राप्त होनेवाला है। अकारण मन उद्वेग से भरा रहेगा। सत्कारों और मनोरंजन में आपको स्थान प्राप्त होगा। भोजन समारंभ में आमन्त्रित किए जायेंगे। मुख्य अतिथि विशेष का स्थान भी प्राप्त होगा।

∇ (15-सितंम्बर-2021 >> 21-नवेम्बर-2021)

इस समय गुरु पंचम भाव का सक्रमण करेगा

बृहस्पति का श्रेष्ठ प्रभाव आप पर होने से आपका मान्यता बढ़ेगा और पदोन्नति भी प्राप्त होगा। निवास स्थान बच्चों के मधुर किल्लोल से गूँज उठेगा। धन और शान्ति दोनों प्राप्त होंगे। घर के निर्माण का या दूसरे देश में जाने का अच्छा समय है। मानसिक स्वस्थता प्राप्त होगा। सिफ़ारिशों के माध्यम से मुलाकात के लिए धैर्य के साथ चलें। सफलता प्राप्त होगा। नए कपड़े या आभूषण मिलना संभव हैं। लेखन और प्रकाशन संबन्धी काम सफल होंगे।

शनि का गोचर फल।

शनिचर सामान्यतः दुःख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दुःख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनिचर एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

∇ (25-जानुवरी-2020 >> 29-अप्रेल-2022)

इस समय शनि पंचम भाव का सक्रमण करेगा

घर के बच्चों से कई प्रश्न उठेंगे। अलग अलग रहकर दुःखी हो जाएँगे। आप खुश रहिए कि शनिचर आपका अनुकूल होनेवाला है। जीवन सुखी बनेगा और धन प्राप्ति होगी। निष्ठापूर्ण रहकर कार्य करने से लाभ होगा।

∇ (30-अप्रेल-2022 >> 12-जूलाई-2022)

इस समय शनि छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

पिछले दिनों की तुलना में यह काल आपको शाँति और सुख दिलायेगा। आपके विरोधी अब आप को अधिक बलवान समझेंगे। नए कार्यों को शुरु करने का अच्छा समय है। जीवन अधिक सुखी होगा और धन कमाने का श्रेष्ठ मौका प्राप्त होगा। अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। अपने स्थान को मज़बूत बनाने केलिए अपनी प्रतिभा को तेजस्वी बनाने का पुरुषार्थ आवश्यक हैं।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	शनि	20-04-1967	24-02-1970	अनुकूल
राहु	मंगल	25-02-1979	14-03-1980	अनुकूल
गुरु	शनि	02-05-1982	13-11-1984	उचित
गुरु	बुध	13-11-1984	18-02-1987	अनुकूल
गुरु	केतु	18-02-1987	25-01-1988	अनुकूल
गुरु	शुक्र	25-01-1988	25-09-1990	अनुकूल
गुरु	रवि	25-09-1990	15-07-1991	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	15-07-1991	13-11-1992	अनुकूल
गुरु	मंगल	13-11-1992	19-10-1993	उचित
गुरु	राहु	19-10-1993	14-03-1996	अनुकूल
शनि	बुध	18-03-1999	25-11-2001	अनुकूल
शनि	केतु	25-11-2001	04-01-2003	अनुकूल
शनि	शुक्र	04-01-2003	05-03-2006	अनुकूल
शनि	रवि	05-03-2006	15-02-2007	अनुकूल
शनि	चन्द्र	15-02-2007	16-09-2008	अनुकूल
शनि	मंगल	16-09-2008	26-10-2009	उचित
शनि	राहु	26-10-2009	31-08-2012	अनुकूल
शनि	गुरु	31-08-2012	15-03-2015	उचित

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
11-11-1969	11-12-1970	अनुकूल
24-01-1973	08-02-1974	अनुकूल
19-02-1975	18-07-1975	उचित
10-09-1975	25-02-1976	उचित
08-07-1976	08-12-1976	अनुकूल
22-02-1977	17-07-1977	अनुकूल
04-08-1978	29-08-1979	उचित
27-10-1981	25-11-1982	अनुकूल
10-01-1985	24-01-1986	अनुकूल
02-02-1987	16-06-1987	उचित
25-10-1987	02-02-1988	उचित
19-06-1988	01-07-1989	अनुकूल
20-07-1990	14-08-1991	उचित
12-10-1993	10-11-1994	अनुकूल
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल

25-05-1998	09-09-1998	उचित
12-01-1999	26-05-1999	उचित
03-06-2000	16-06-2001	अनुकूल
06-07-2002	30-07-2003	उचित
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	शनि	20-04-1967	24-02-1970	अनुकूल
राहु	शुक्र	01-10-1973	01-10-1976	अनुकूल
राहु	मंगल	25-02-1979	14-03-1980	अनुकूल
गुरु	शनि	02-05-1982	13-11-1984	उचित
गुरु	बुध	13-11-1984	18-02-1987	अनुकूल
गुरु	केतु	18-02-1987	25-01-1988	अनुकूल
गुरु	शुक्र	25-01-1988	25-09-1990	उचित
गुरु	रवि	25-09-1990	15-07-1991	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	15-07-1991	13-11-1992	अनुकूल
गुरु	मंगल	13-11-1992	19-10-1993	उचित
गुरु	राहु	19-10-1993	14-03-1996	अनुकूल
शनि	बुध	18-03-1999	25-11-2001	अनुकूल
शनि	केतु	25-11-2001	04-01-2003	अनुकूल
शनि	शुक्र	04-01-2003	05-03-2006	उचित
शनि	रवि	05-03-2006	15-02-2007	अनुकूल
शनि	चन्द्र	15-02-2007	16-09-2008	अनुकूल
शनि	मंगल	16-09-2008	26-10-2009	उचित
शनि	राहु	26-10-2009	31-08-2012	अनुकूल
शनि	गुरु	31-08-2012	15-03-2015	उचित

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
11-11-1969	11-12-1970	अनुकूल
24-01-1973	08-02-1974	अनुकूल
19-02-1975	18-07-1975	उचित
10-09-1975	25-02-1976	उचित
08-07-1976	08-12-1976	अनुकूल

22-02-1977	17-07-1977	अनुकूल
04-08-1978	29-08-1979	उचित
27-10-1981	25-11-1982	अनुकूल
10-01-1985	24-01-1986	अनुकूल
02-02-1987	16-06-1987	उचित
25-10-1987	02-02-1988	उचित
19-06-1988	01-07-1989	अनुकूल
20-07-1990	14-08-1991	उचित
12-10-1993	10-11-1994	अनुकूल
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल
25-05-1998	09-09-1998	उचित
12-01-1999	26-05-1999	उचित
03-06-2000	16-06-2001	अनुकूल
06-07-2002	30-07-2003	उचित
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पजता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	चन्द्र	26-08-1977	25-02-1979	अनुकूल
गुरु	शनि	02-05-1982	13-11-1984	अनुकूल
गुरु	बुध	13-11-1984	18-02-1987	अनुकूल
गुरु	केतु	18-02-1987	25-01-1988	अनुकूल
गुरु	शुक्र	25-01-1988	25-09-1990	अनुकूल
गुरु	रवि	25-09-1990	15-07-1991	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	15-07-1991	13-11-1992	उचित
गुरु	मंगल	13-11-1992	19-10-1993	अनुकूल
गुरु	राहु	19-10-1993	14-03-1996	अनुकूल
शनि	चन्द्र	15-02-2007	16-09-2008	अनुकूल
शनि	गुरु	31-08-2012	15-03-2015	अनुकूल
बुध	चन्द्र	14-04-2022	13-09-2023	अनुकूल
बुध	गुरु	30-03-2027	05-07-2029	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
04-08-1978	29-08-1979	उचित

27-10-1981	25-11-1982	अनुकूल
10-01-1985	24-01-1986	अनुकूल
02-02-1987	16-06-1987	उचित
25-10-1987	02-02-1988	उचित
19-06-1988	01-07-1989	अनुकूल
20-07-1990	14-08-1991	उचित
12-10-1993	10-11-1994	अनुकूल
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल
25-05-1998	09-09-1998	उचित
12-01-1999	26-05-1999	उचित
03-06-2000	16-06-2001	अनुकूल
06-07-2002	30-07-2003	उचित
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	उचित
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	उचित
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	उचित
03-06-2026	31-10-2026	उचित

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	3	5	3	5	3	1	24
वृषभ	4	3	4	6	3	4	4	28
मिथुन	6	5	5	6	3	3	5	33
कर्क	4	6	6	4	3	7*	3	33
सिंह	4	4	4	5	5	6	4	32
कन्या	4*	5	4	3	3	4	4	27
तुला	3	2	6*	3*	2	5	1*	22
वृशचिक	2	5*	4	5	2	4	4	26
धनु	3	3	4	6	2	3	4	25
मकर	5	3	4	3	4*	6	1	26
कुंम्भ	7	5	6	5	4	7	4	38
मीन	3	4	2	3	3	4	4	23
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न मेष में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के प्रभाव से आपका भाग्य अपने जन्मकुण्डली में उपस्थित चार बिन्धुओं के कारण होगा । आपको भाग्यशाली ताबीज या भाग्य का सन्देश पहुँचने वाला कहा जाएगा । यह प्रभाव आपके परिवार के संतोष और समृद्वि का कारण बन जाएगा ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

सूर्य के अष्टकवर्गा में पाँच बिन्धु है और आप धर्मनिष्ट लोगों के साथ होगा । आपको ज्ञान और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगा । आपके सफलताओं पर लोग प्रंशसा करेगें । आपको कभी भी नए कपडों से प्यार नहीं होगा । अपने यौवन और बचपन के समय बहुत से उत्सवों को मना सकते है ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के बुध अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है । यह आपको हर क्षेत्र में सफलता प्रधान करता है । औधोगिक विषय और परियोजनओं में कोई रुकावट और मुसीबत नहीं होगा ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

जाने और अनजाने में अपने अधिकारियों के साथ समझदारी की कमी आपको आश्चर्य करेगा । यह आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्गा में उपस्थित तीन बिन्धुओं के कारण होगा । अपने वाक्य और कर्म पर नियंत्रण रखने से बुरे भाग्य को दूर कर सकते है ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के मंगल अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु आपको भाग्यवान बनाएगो । यह अवस्थिति गृहों के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए ओर सहायक होगा और आपको तुल्य रुप से अच्छा और बुरा भाग्य प्रधान करेगा । आपको अत्यधिक आनन्द लेने का अवसर प्राप्त नहीं होगा न हि आपको दुःख के गहराई में डूबना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्ग में असाधरण से उपस्थित सात बिन्धु आपको सोना और भाग्य से अनुग्रहित करेगा । खुशी और धन ज्यादातर समय साथ नहीं मिलेगा लेकिन आपके लिए यह आपके लिए गैरमामूली होगा । यह एक आशचर्य की बात है ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

आपको ज्यादा धन-सम्पत्ति प्राप्त करने का योग नहीं है और जो सम्पत्ति आपके पास है यह नष्ट होने की सभावना है । यह कोई अप्रत्याशित कारण से या भगवान की लीला विलास ते होगा । यह आपके जन्मकुण्डली में उपस्थित अकेले बिन्धु का कारण होगा जो शनि अष्टकवर्ग का अधिकार करता है । युद्व, विप्लव क्षेत्र, सामाजिक और राजनीतिक रुप से विभाजित क्षेत्र और विपत्ति युक्त क्षेत्रों से दूर रहना चाहिए ताकि बुरे प्रभावों को कम कर सकें । मुसीबतों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए । अपने गृहों के प्रभाव पर आपका ज्ञान अपरिहार्य घटनाओं को सामना करना का शक्ति प्रधान करेगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली ग्यारहवी भाव को दसवी भाव से ज्यादा बिन्धु है, लेकिन बारहवी भाव को ग्यारहवी भाव से कम बिन्धु है और उदीयमान में उपस्थित बिन्धु ग्यारहवी से भी महत्व है । अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्वि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर धटित है जिनके गृहों का प्रभाव आपके जैसे हो । आपका समृद्वि और प्रसिद्वि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगा । जरुर ही आपका एक अनुग्रहित जीवन होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय ३३ और २२ उम्र में होगा ।

best wishes : Sri Gaura Radha Govinda Harinam Trust
Radha Govinda International, Govardhan Parikrama road, Opposite SBI ATM, Radhakund 281504.

[Ref:14.0 S Hin-001-3345-5F52-64E3]

Note: This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of

this report.